कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qksu (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

विशाल अभिनंदन रैली, रामलीला मैदान (दिल्ली)

उनकी धरना-प्रदर्शन करने में मास्टरी, हमारी अच्छी सरकार चलाने में...... 6

दिल्ली विधानसभा चुनाव पर रिपोर्ट

अब दिल्ली विजय की तैयारी.. 8

किरण बेदी बनी भाजपा मुख्यमंत्री पद की प्रत्याशी................................ 9

भाजपा अध्यक्ष का प्रवास

पश्चिम बंगाल.. 16

बिहार... 29

लेख

दो वैश्विक शिखर सम्मेलनों का किस्सा

– **अरुण जेटली**.. 18

पार्टी में आपका स्वागत है!

– **विनय सहस्रबुद्धे**... 19

कांग्रेस के उबरने के आसार नहीं

– **बलबीर पुंज**... 21

पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर विशेष

विचारक दीनदयालजी

–**संजीव कुमार सिन्हा**.. 26

अटलजी का प्रथम अध्यक्षीय भाषण : भाग-4

अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा.. 23

अन्य

वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक निवेशक सम्मेलन... 11

प्रवासी भारतीय दिवस.. 13

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को

वसंत पंचमी

की हार्दिक शुभकामनाएं!

उपदेश का समय

स्वामी विवेकानंद से मिलने दूर दूर से लोग आया करते थे। एक बार अपने समय के मशहूर लेखक और पत्रकार सखाराम गदेड़स्कर अपने दो मित्रों के साथ स्वामी जी से मिलने गए। उन दिनों पंजाब में जबर्दस्त अकाल पड़ा हुआ था। बातचीत के दौरान जैसे ही स्वामी जी को पता चला कि उनमें से एक पंजाब के निवासी हैं, उन्होंने बातचीत की दिशा ही बदल दी।

उन्होंने अकाल-पीड़ितों के बारे में पूरी संजीदगी से चिंता प्रकट करते हुए, वहां के लिए किए जा रहे राहत कार्यों के बारे में उनसे देर तक हालचाल जाने। यह देखकर सखाराम को बड़ी हैरानी हुई। उन्होंने विनयपूर्वक स्वामी विवेकानंद से कहा- 'हम तो आपके पास इस उम्मीद से आए थे कि धर्म के विषय में आपसे उत्कृष्ट उपदेश सुनने को मिलेगा। लेकिन देखा कि आप तो हमारे साथ सामान्य विषयों की ही चर्चा में लगे रहे। हम लोग तो ज्ञान पाने की उम्मीद में यहां आए थे।'

यह सुनकर स्वामी जी क्षण-भर तो चुप रहे, फिर बड़े गंभीर स्वर में बोले- 'देखो भाई, जब तक मेरे देश में एक भी छोटा बच्चा कहीं भूखा है, तब तक उसे खिलाना ही हमारा सच्चा धर्म है। इसके अलावा जो कुछ भी है, वह झूठा धर्म और ज्ञान है। कहीं देशवासी का पेट खाली हो, तो वह उपदेश का समय कैसे हो सकता है। उस समय तो वह निरा दंभ है। उस समय सबसे पहले पहले उन्हें भोजन देने की कोशिश करनी चाहिए।'

यह सुनकर सखाराम को अपना धार्मिक होने का दंभ दिखावा-सा लगने लगा। उन्होंने कहा, 'आप ठीक कह रहे हैं। आपने उपदेश की भाषा में भले ही नहीं कहा, लेकिन आपकी बातों से हमारी आंखें खुल गईं।'

संकलन : राधा नाचीज

(नवभारत टाइम्स)

पाथेय

भारतीय जीवन का प्रमुख तत्त्व उसकी संस्कृति अथवा धर्म होने के कारण उसके इतिहास में भी जो संघर्ष हुए हैं, वे अपनी संस्कृति की सुरक्षा के लिए ही हुए हैं तथा इसी के द्वारा हमने विश्व में ख्याति भी प्राप्त की है। हमने बड़े-बड़े साम्राज्यों के निर्माण को महत्त्व न देकर अपने सांस्कृतिक जीवन को पराभूत नहीं होने दिया। यदि हम अपने मध्ययुग का इतिहास देखें तो हमारा वास्तविक युद्ध अपनी संस्कृति के रक्षार्थ ही हुआ है। उसका राजनीतिक स्वरूप यदि कभी प्रकट भी हुआ तो उस संस्कृति की रक्षा के निमित्त ही। राणा प्रताप तथा राजपूतों का युद्ध केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए नहीं था किंतु धार्मिक स्वतंत्रता के लिए ही था। छत्रपति शिवाजी ने अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना गौ-ब्राह्मण-प्रतिपालक के लिए ही की। सिक्ख-गुरुओं ने समस्त युद्ध-कर्म धर्म की रक्षा के लिए ही किए। इन सबका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि राजनीति का कोई महत्त्व नहीं था तथा राजनीतिक गुलामी हमने सहर्ष स्वीकार कर ली थी; किंतु तात्पर्य यह है कि राजनीति को हमने जीवन में केवल सुख का कारण-मात्र माना है, जबकि संस्कृति संपूर्ण जीवन ही है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय (संदर्भ : राष्ट्र चिंतन पुस्तक)

अब दिल्ली की बारी...

दिल्ली की जनता अब नई सरकार चुनने जा रही है। चुनाव आयोग की घोषणा के बाद यहां राजनैतिक सरगर्मियां काफी तेज हो गई हैं। 7 फरवरी को चुनाव होंगे और 10 फरवरी को नतीजे आ जाएंगे। लगभग एक वर्ष बाद दिल्ली में नई सरकार अपना कार्यभार ग्रहण करेगी। दिल्ली की जनता अभी भूली नहीं है कि किस प्रकार पिछली सरकार का गठन हुआ था और किस तरह उनकी आकांक्षाओं पर कुठाराघात हुए थे। झूठ का कारोबार करने वाले व दगाबाजों द्वारा दिल्ली की जनता को ठगा गया। पिछले चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी होने के बाद भी भाजपा ने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया और सरकार नहीं बनाई, जबकि वहीं आम आदमी पार्टी ने अवसरवादिता का परिचय देते हुए कांग्रेस का समर्थन लेकर सरकार बनाई। सिर्फ 49 दिनों में आम आदमी पार्टी भाग खड़ी हुई और दिल्ली को अव्यवस्था का तोहफा दिया। यही कारण है कि दिल्ली की जनता ने पिछले लोक सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को सभी 7 सीटें दीं, वहीं आम आदमी पार्टी व कांग्रेस खाता भी न खोल सकी।

भाजपा ने पूर्व आईपीएस अधिकारी श्रीमती किरण बेदी को मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित किया है। इससे दिल्ली में नई आशा व उत्साह का संचार हुआ है। लोगों को भाजपा से काफी उम्मीदें हैं। देश सेवा हेतु बड़ी संख्या में नेतागण भाजपा में शामिल हो रहे हैं। श्रीमती कृष्णा तीरथ, श्री बिनोद कुमार बिन्नी और श्रीमती शाजिया इल्मी भाजपा में शामिल हो चुके हैं। इससे भाजपा के चुनाव अभियान में बल मिला है। पिछले दिनों रामलीला मैदान में आयोजित रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने न केवल केंद्र सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख किया, बल्कि दिल्ली की जनता को भ्रष्टाचार-मुक्त व विकासोन्मुख सरकार देने का वादा भी किया। लगभग 900 अनधिकृत कालोनियों को नियमित किया गया और दिल्ली की जनता का बिजली बिल कम करने हेतु 'एलईडी बल्ब' मुहैया कराने की नई योजना भी शुरू की गई। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों हरेक को 2022 तक एक मकान देने का वादा कर भविष्य की रूपरेखा भी प्रस्तुत की। उन्होंने अराजकतावादियों को नकारने तथा दिल्ली के बेहतर भविष्य के लिए भाजपा को वोट देने की अपील की। यही कारण है कि कार्य-कुशलता व विश्वसनीयता के लिए जानी जाने वाली श्रीमती किरण बेदी को भाजपा ने मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी बनाया है। दिल्ली के हर वर्ग ने इस कदम का स्वागत किया है तथा बड़ी संख्या में लोग भाजपा का समर्थन कर रहे हैं।

दिनोंदिन लोगों का भाजपा और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी में विश्वास बढ़ता जा रहा है। यह विश्वास सिर्फ भाजपा के लिए नहीं है, बल्कि संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था व राजनेताओं के लिए भी सुदृढ़ हुआ है। पिछले 10 सालों में भ्रष्टाचार, लूट और बड़े-बड़े घोटालों के कारण राजनीति को कालिख लग गई थी, लेकिन लोग अब राहत की सांस ले रहे हैं कि केंद्र में अब काम करने वाली भ्रष्टाचार-मुक्त सरकार आई है, जो सुशासन और विकास के प्रति प्रतिबद्ध है। लोग इस बात को समझ रहे हैं। एक के बाद एक महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड में भाजपा की सरकार बनी। जम्मू-कश्मीर में भाजपा को 25 सीटें मिलीं जो भाजपा की एक बड़ी जीत है। देश के हर कोने में भाजपा को भारी समर्थन मिल रहा है। लोग भाजपा और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को ऐसे नेता के रूप में देख रहे हैं जो उनकी आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह संगठन को और मजबूत कर पार्टी को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं तथा ऐसी व्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं जो भाजपा कार्यकर्ता को समाज के शक्तिशाली स्तंभ के रूप में स्थापित कर सकें। इसलिए लोग भाजपा में विश्वास व्यक्त कर रहे हैं और जहां भी चुनाव होते हैं, वहां भाजपा की सरकार बनती है। महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड के बाद अब दिल्ली की बारी है। ■

विशाल अभिनंदन रैली, रामलीला मैदान (दिल्ली)

उनकी धरना-प्रदर्शन करने में मास्टरी, हमारी अच्छी सरकार चलाने में : नरेंद्र मोदी

दिल्ली के रामलीला मैदान में 10 जनवरी को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव प्रचार का बिगुल फूंकते हुए आम आदमी पार्टी को सीधे निशाने पर लिया और दिल्ली की जनता से अपील की कि जिन लोगों ने दिल्ली का एक साल 'बर्बाद और तबाह' किया, उन्हें ऐसी सजा दे कि वे फिर नहीं पनपने पाएं। श्री मोदी ने कहा कि कुछ लोगों द्वारा रिटायरमेंट की उम्र 60 से घटाकर 58 साल करने जैसे कई झूठ फैलाए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में झूठ की बड़ी फैक्ट्री पूरे जोर शोर से चल रही है। वे झूठ बोलने में माहिर हैं, लेकिन मोदी कोई पीठ में छुरा घोंपने वाला इंसान नहीं है। यह सरासर झूठ है। आगे भी ऐसे जाने कितने झूठ फैलाए जाएंगे, लेकिन आप उन पर भरोसा नहीं करना। दिल्ली में पूर्ण बहुमत की सरकार चुनने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा, एक साल बर्बाद हो गया दिल्ली का। जिसने दिल्ली का एक साल बर्बाद और तबाह किया उन्हें (चुनाव में) सजा दी जाए। जिन्होंने दिल्ली को स्थिर सरकार नहीं दी उन्हें पनपने नहीं दिया जाए।

श्री मोदी ने भाषण की शुरुआत अलग-अलग राज्यों से आए बीजेपी के मुख्यमंत्रियों के स्वागत से की। उन्होंने आगे कहा कि जम्मू-कश्मीर में ऐतिहासिक जीत मिली, जनता को बधाई। जनता ने लोकतंत्र में विश्वास जताया। उन्होंने कहा, जो देश का मूड, वही दिल्ली का भी मूड है।

राष्ट्रीय राजधानी में 49 दिन की सरकार चलाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का नाम लिए बिना उन पर जोरदार प्रहार करते हुए श्री मोदी ने कहा कि कभी ऐसा नेता देखा है, जो खुद कहे कि 'मैं अराजकतावादी हूं'।

अगर वह अराजकता चाहते हैं तो जंगलों में जाकर नक्सलियों में शामिल हो जाएं। दिल्ली में नक्सलवाद नहीं चलने दिया जा सकता है।

भाजपा के नेतृत्व में पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनाने का दिल्लीवासियों से आग्रह करते हुए उन्होंने कहा, कि भाजपा दिल्ली में ऐसी स्थिर और मजबूत सरकार देगी जो न सिर्फ खराब हुए एक साल की खाई भरेगी, बल्कि 15 साल के (कांग्रेस शासन के) अधूरे सपनों को भी पूरा करेगी। 'आप' नेतृत्व पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा, जिनको जो काम आता है उन्हें वह काम दीजिए। जिन्हें फुटपाथ पर बैठने, धरना देने की आदत और मास्टरी हो उन्हें वह मास्टरी करने दें और हमारी मास्टरी अच्छी सरकार बनाने की है, हमें वह करने दें।

लोकसभा चुनाव के दौरान किए गए वादों को सरकार बनने पर पूरा नहीं करने के कांग्रेस के आरोप पर भी पलटवार करते हुए श्री मोदी ने कहा चालीस साल से वोट पाने के लिए झूठे नारे दिए जाते रहे। चालीस साल पहले कांग्रेस ने गरीबी हटाओ का नारा दिया, लेकिन जितने तेजी से गरीबी हटाओ के नारे लगे, उतनी ही तेजी से गरीबी बढ़ी। ऐतिहासिक रामलीला मैदान में आयोजित इस रैली में उन्होंने कहा कि इसी तरह 40 साल पहले ही 'कांग्रेस की सल्तनत''

ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण यह कह कर किया कि बैंक अमीरों के कब्जे में हैं और उनसे गरीबों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा, लेकिन दु:ख की बात यह है कि बैंकों को सरकारी कब्जे में लेने के बाद उन्हें भ्रष्टाचार का अड्डे बना दिया गया। गरीबों के लिए उनके दरवाजे नहीं खुले।

श्री मोदी ने कहा कि उनकी सरकार ने जनधन योजना के तहत बिना बैलेंस के गरीबों के खाते खुलवाने का कार्यक्रम शुरू किया। उन्होंने कहा कि पहले एक साल में एक करोड़ खाते खुलते थे लेकिन जनधन योजना के तहत एक सप्ताह में एक करोड़ खाते खुल गए। उन्होंने कहा, यही नहीं, इस योजना के तहत गरीबों का एक लाख रुपये का मुफ्त बीमा भी कराया गया है, जिससे किसी के यहां अनहोनी होने पर उसके परिवार को यह राशि मिल सके।

उन्होंने कहा, वोट पाने के लिए झूठे नारे दिए जाते रहे, इसीलिए हम ऐसी राजनीति ला रहे हैं जो राज्यवाद, सम्प्रदायवाद से परे सिर्फ विकास की राजनीति पर आधारित होगी।

प्रधानमंत्री ने कहा, 30-40 साल पहले दुनिया और हिन्दुस्तान में यह राजनीति चलती थी कि झूठे नारे दो और गरीबों को भड़काने के लिए दो-चार अमीरों को गाली देकर अपना उल्लू सीधा करते रहो। लेकिन अब वक्त बदल गया है। गरीब दो-चार अमीरों को गाली देने से उल्लू नहीं बनेगा बल्कि वह सवाल कर रहा है कि 'मेरे लिए क्या किया, मेरा हिस्सा दो'।

भ्रष्टाचार उन्मूलन के वादे को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ने का दावा करते हुए श्री मोदी ने कहा कि सात महीने हो गए मुझे प्रधानमंत्री बने हुए, क्या किसी ने कोई शिकायत की, क्या विपक्ष सहित किसी ने आरोप लगाया? मैंने भ्रष्टाचार का विरोध किया। मैं जहां बैठता हूं, वहां से शुरू किया। अब धीरे-धीरे सड़कों, गलियों तक यह जाएगा। आपको पैसे देने पड़ते हैं। ऑटो वाला भी ज्यादा पैसे लेता है। उन्होंने कहा कि मुझ पर भरोसा कीजिए ये सफाई भी (निचले स्तर पर भ्रष्टाचार समाप्त करना) मैं करके रहूंगा। मेरा यह सपना पूरा करने में मुझे आपकी मदद चाहिए। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली दिल्ली की विशाल जनसंख्या से मुखातिब होते हुए उन्होंने वायदा किया कि वर्ष 2022 तक सभी कच्ची बस्तियों को पक्के मकानों में बदल दिया जाएगा।

मैंने भ्रष्टाचार का विरोध किया। मैं जहां बैठता हूं, वहां से शुरू किया। अब धीरे-धीरे सड़कों, गलियों तक यह जाएगा। आपको पैसे देने पड़ते हैं। ऑटो वाला भी ज्यादा पैसे लेता है। उन्होंने कहा कि मुझ पर भरोसा कीजिए ये सफाई भी (निचले स्तर पर भ्रष्टाचार समाप्त करना) मैं करके रहूंगा। मेरा यह सपना पूरा करने में मुझे आपकी मदद चाहिए। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली दिल्ली की विशाल जनसंख्या से मुखातिब होते हुए उन्होंने वायदा किया कि वर्ष 2022 तक सभी कच्ची बस्तियों को पक्के मकानों में बदल दिया जाएगा।

दिल्लीवासियों को चौबीसों घंटे बिजली मुहैया कराने वायदा करते हुए श्री मोदी ने कहा कि इससे दिल्ली 'जेनरेटर मुक्त' हो जाएगी और उसका पर्यावरण स्वच्छ होगा।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार एक और 'क्रांतिकारी कदम' उठाने जा रही है और वह है मोबाइल फोन सेवाओं की तरह ही जनता को अपनी पसंद के बिजली आपूर्तिकर्ताओं को चुनने की आजादी। उन्होंने कहा कि मोबाइल सेवाओं की ही तरह इस कदम से बिजली कंपनियों में भी प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और बिजली के दाम अपने आप घट जाएंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार की इस योजना की शुरुआत दिल्ली से होगी। दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में पेय जल की भारी किल्लत को दूर करने का भी वायदा करते हुए दिल्लीवासियों से उन्होंने कहा कि केन्द्र के हस्तक्षेप के बाद हरियाणा राष्ट्रीय राजधानी को अतिरिक्त जल उपलब्ध कराने पर राजी हो गया है।

रैली को संबोधित करते हुए भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा, ''नरेंद्र मोदी के आने से देश में आशा का संचार हुआ है। 2014 इतिहास में विजय वर्ष के रूप में जाना जाएगा। 7 महीने में 10 बार पेट्रोल-डीजल के दाम घटे हैं। भाजपा वादा निभाने वाली पार्टी है। काले धन पर एसआईटी का गठन किया गया। स्किल डेवलपमेंट के लिए अलग मंत्रालय बनाया गया है।'' पाकिस्तान का सीजफायर उल्लंघन पर श्री शाह बोले, ''पाकिस्तान की गोली का जवाब हम गोले से देते हैं।'' उन्होंने कहा कि दिल्ली के लिए भाजपा ने काम किया है। अब लोगों को तय करना है कि झूठे वादे करने वाले चाहिए या भाजपा सरकार चाहिए।' श्री अमित शाह ने श्री अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते

शेष पृष्ठ 20 पर

दिल्ली विधानसभा चुनाव पर रिपोर्ट

अब दिल्ली विजय की तैयारी...

– हमारे संवाददाता द्वारा

दिल्ली विधानसभा चुनावों के मद्देनजर राज्य में चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है। सभी पार्टियों ने चुनाव प्रचार में सारी ताकत झोंक दी है। तीनों प्रमुख पार्टियां भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। मुख्य मुकाबला भाजपा और आप में ही है। इस बार के चुनाव में प्रमुख मुद्दे हैं-कानून-व्यवस्था, पानी, बिजली, ट्रैफिक, परिवहन, अवैध कॉलोनियां, भ्रष्टाचार, पार्किंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और बेरोजगारी की समस्याएं।

विदित हो कि दिल्ली विधानसभा के चुनाव 7 फरवरी को होने है और मतगणना 10 फरवरी को। दिल्ली में एक करोड़ 30 लाख मतदाता हैं। दिल्ली विधानसभा की कुल 70 में से 12 सीटें आरक्षित हैं। दिल्ली में पिछला विधानसभा चुनाव दिसंबर 2013 में हुआ था लेकिन इस चुनाव में किसी को बहुमत नहीं मिला। 31 सीटों के साथ भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। आम आदमी पार्टी को 28 सीटें मिली थीं। कांग्रेस को मात्र आठ सीटें हासिल हुई थीं। आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस के समर्थन ने सरकार बनाई थी, लेकिन यह सरकार 49 दिन ही चली। पिछली विधानसभा चुनाव में 28 सीटें हासिल करने वाली आप के लिए उस करिश्मे को दोहरा पाना बेहद मुश्किल होगा, क्योंकि केजरीवाल लहर अब दिखाई नहीं पड़ती। 'आप' का संगठन कमजोर हो चुका है। श्रीमती शाजिया इल्मी, श्री विनोद कुमार बिन्नी, श्री एमएस धीर और श्री अशोक चौहान जैसे कई नेता श्री केजरीवाल का साथ छोड़ कर भाजपा में शामिल हो गए। वहीं कांग्रेस से श्रीमती कृष्णा तीरथ, श्री एमसी वत्स और श्री अरविंद कुमार भी भाजपा में शामिल हुए। इसके साथ भाजपा को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्ववाली राजग सरकार की उपलब्धियों और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह की कुशल सांगठनिक क्षमता का भी लाभ मिल रहा है।

70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा भले ही छोटी हो लेकिन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र होने से इसका राजनीतिक महत्व व्यापक है। महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड में अपनी सरकार बनाने और जम्मू कश्मीर में पहली बार 25 सीट जीतने पर भाजपा के हौसले बुलंद हैं। इस लड़ाई में कांग्रेस बहुत पीछे छूट गई है और असली मुकाबला भाजपा-आप के बीच ही है। वैसे तो दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा पूरी तरह आश्वस्त थी कि राज्य में उसी की सरकार बनेगी, और अब तो देश की प्रथम आईपीएस महिला श्रीमती किरण बेदी के भाजपा में शामिल होने और मुख्यमंत्री प्रत्याशी घोषित होने के बाद से यह उम्मीद और दुगुनी हो गई है। ■

किरण बेदी बनी भाजपा मुख्यमंत्री पद की प्रत्याशी

भाजपा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी श्रीमती किरण बेदी को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया है। वह कृष्णा नगर सीट से चुनाव लडेंगी। पार्टी की संसदीय बोर्ड की 19 जनवरी को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक हुई जिसमें उम्मीदवारों के नाम तय किए गए। बैठक में श्री शाह के अलावा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह और वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली भी शामिल थे।

श्री शाह ने कहा कि पार्टी श्रीमती किरण बेदी के नेतृत्व में दिल्ली में

बैठक में श्रीमती बेदी को सर्वसम्मति से मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। श्रीमती बेदी 15 जनवरी को भाजपा में शामिल हुई थीं।

श्रीमती किरण बेदी भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह, वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली की उपस्थिति में भाजपा में शामिल हुई। श्रीमती किरण बेदी ने एसएमएस भेजकर भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

इस बैठक से पहले पार्टी की चुनाव लड़ेंगी और वह पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री पद की भी उम्मीदवार होंगी। भाजपा ने जो नाम दिल्ली के लोगों के सामने रखा है वह दिल्ली के लोगों की अपेक्षाओं की पूर्ति करेगा। उनके नेतृत्व में चुनाव लड़ने से निश्चित ही पार्टी को विजय मिलेगी।

श्री अमित शाह ने कहा, ''किरण बेदी किसी को टक्कर देने नहीं, बल्कि अव्यवस्था को दूर करने के पार्टी के लक्ष्य में साथ देने भाजपा में आई हैं।''

➡

किरण बेदी : एक प्रेरक व्यक्तित्व

अमृतसर के एक छोटे से परिवार में 9 जून, 1949 को जन्मी किरण बेदी सामाजिक कार्यकर्ता एवं भारतीय पुलिस सेवा की प्रथम वरिष्ठ महिला अधिकारी रही हैं।

वे संयुक्त आयुक्त पुलिस प्रशिक्षण तथा दिल्ली पुलिस स्पेशल आयुक्त (खुफिया) के पद पर कार्य कर चुकी हैं। वह वर्ष 2002 के लिए भारत की 'सबसे प्रशंसित महिला' चुनी गयीं।

2011 में सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के साथ श्रीमती किरण बेदी ने 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' अभियान में हिस्सा लिया।

यही नहीं श्रीमती किरण बेदी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की कार को गलत जगह पार्क होने के कारण क्रेन से उठवा लिया था, श्रीमती बेदी के इस तरह की कारवाई से लोग उन्हें क्रेन बेदी कहने लगे थे।

श्रीमती किरण बेदी ने तिहाड़ जेल का भी कायाकल्प कर दिया और यहां के कैदियों को एक नया जीवन देने की कोशिश की। तिहाड़ में जेल सुधार कार्यक्रम के लिए किरण को मैगसेसे अवार्ड से भी नवाजा गया।

श्री अमित शाह ने कहा कि किरण बेदी के शामिल होने से दिल्ली में भाजपा संगठन मजबूत होगा।

श्रीमती बेदी ने कहा कि मेरी प्रेरणा पीएम की लीडरशिप है। मैंने तय किया है देश की सेवा करना। मेरी जिंदगी देश को समर्पित है। मेरी संस्थाएं बच्चों को शिक्षित करती हैं। मेरी संस्थाएं 26 साल से काम कर रही हैं। दिल्ली को स्थिर सरकार की जरूरत है। मुझे काम करना और करवाना आता है।

वहीं श्री अरुण जेटली ने कहा कि हम अच्छे और विश्वसनीय लोगों को जोड़ने का लगातार प्रयास करते हैं। हमें खुशी है कि किरण बेदी भाजपा में शामिल हुई। उनके पास अनुभव है।

उन्होंने कहा, ''मुझे 40 साल का अनुभव है और हम टीम वर्क के सहारे दिल्ली को दुनिया की नंबर वन राजधानी बना सकते हैं।'' श्रीमती बेदी ने कहा कि अरविंद केजरीवाल नकारात्मक राजनीति कर रहे हैं।

श्री शाह ने कहा कि भाजपा में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा काम करने वाले लोग आते रहे हैं और उन्होंने अच्छा काम किया है। श्रीमती बेदी को कृष्णानगर से चुनाव लड़ाने के बारे में श्री शाह ने कहा, परंपरागत रूप से यह भाजपा की सीट रही है। हम चाहते हैं कि वह पार्टी के प्रचार को ज्यादा से ज्यादा समय दें।

कृष्णानगर सीट से डॉ. हर्षवर्धन लगातार पांच बार चुनाव जीते हैं और पिछले चुनाव में वह पार्टी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार थे। भाजपा राजधानी की 70 में से 68 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, जबकि शेष दो सीटें उसने अकाली दल के लिए छोड़ी हैं। ■

शाजिया इल्मी भाजपा में हुई शामिल

आम आदमी पार्टी की पूर्व नेता श्रीमती शाजिया इल्मी 16 जनवरी को भाजपा में शामिल हो गई। दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने श्रीमती शाजिया को औपचारिक तौर पर भाजपा की सदस्यता दिलाई है। इससे पहले उन्होंने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह से मुलाकात की थी।

भाजपा में शामिल होने के बाद श्रीमती शाजिया इल्मी ने कहा यह आम जनता की सेवा करने का मौका है। मुझे लगता है कि अराजक राजनीति, बदले की भावना वाली राजनीति से नहीं, बदलाव की राजनीति, विकास की राजनीति करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमे अपने देश के विकास के लिए एक सिपाही के तौर पर काम करना होगा। श्रीमती शाजिया इल्मी ने कहा कि उन्होंने आजीवन भाजपा का दामन थाम लिया है। अब यह साथ हमेशा बना रहेगा।

पूर्व कैबिनेट मंत्री कृष्णा तीरथ भाजपा में शामिल

मनमोहन सिंह मंत्रिमंडल में केंद्रीय मंत्री रहीं श्रीमती कृष्णा तीरथ भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गई हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले इसे कांग्रेस के लिए यह एक बड़ा झटका है। श्रीमती कृष्णा तीरथ यूपीए सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की केंद्रीय मंत्री थीं।

उन्होंने 19 जनवरी को भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष श्री अमित शाह से मुलाकात के बाद भारतीय जनता पार्टी से जुड़ने की घोषणा की। श्री शाह से मिलने के बाद श्रीमती कृष्णा तीरथ ने कहा कि भाजपा की विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने यह निर्णय लिया है। दिल्ली की राजनीति में पकड़ रखने वाली कृष्णा तीरथ चार बार विधायक रह चुकी हैं।

विनोद कुमार बिन्नी और पूर्व स्पीकर मनिंदर सिंह धीर भाजपा में शामिल

आम आदमी पार्टी के पूर्व विधायक श्री विनोद कुमार बिन्नी 18 जनवरी को भाजपा में शामिल हो गए। लक्ष्मीनगर से आम आदमी पार्टी के पूर्व विधायक बिन्नी ने पिछले साल आम आदमी पार्टी छोड़ दी थी।

उल्लेखनीय है कि आम आदमी पार्टी के विधायक और पूर्व स्पीकर श्री मनिंदर सिंह धीर 21 नवंबर को भाजपा में शामिल हो गए थे। उस समय श्री धीर के अलावा दो अन्य आप नेता श्री राजेश राजपाल और श्री अश्विनी उपाध्याय भी भाजपा में शामिल हुए। ■

वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक निवेशक सम्मेलन

भारत में भरपूर अवसर : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 11 जनवरी को गांधीनगर में वैश्विक निवेशकों को स्थिर कर व्यवस्था तथा भरोसेमंद, पारदर्शी और निष्पक्ष नीतिगत वातावरण तैयार करने की भारत सरकार की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने दुनिया की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित व उसे दिशा देने वाले लोगों के साथ मंच साझा किया। वाइब्रेंट गुजरात के इस मंच से उन्होंने अपने विचार का दायरा बढ़ाया और 'वाइब्रेंट इंडिया' के रूप में पेश किया। उद्घाटन सत्र में अमेरिकी विदेश मंत्री श्री जान केरी, संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बान की मून, विश्व बैंक के अध्यक्ष श्री जिम योंग किम और अन्य देशों के नेता तथा देश-विदेश की नामी कंपनियों के शीर्ष अधिकारी मौजूद थे।

भारत में कारोबार करने को आसान करना, आपकी मुख्य चिंता है और यह हमारी भी चिंता है। मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि हम इन मुद्दों पर गंभीरता से काम कर रहे हैं। निवेशकों की लालफीताशाही सहित अन्य चिंताओं को दूर करते हुए उन्होंने कहा,'हम इसे पहले की तुलना में या दूसरों की तुलना में आसान नहीं बल्कि सबसे आसान बनाना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दुनिया के देशों और कॉरपोरेट घरानों से भारत में निवेश करने का आह्वान किया। श्री मोदी ने कहा कि वह देश के आम लोगों का जीवन स्तर सुधारना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ) के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। वह रक्षा व बीमा क्षेत्र में 49 फीसदी एफडीआइ लाएंगे। हाई स्पीड ट्रेन के संकल्प को दोहराते हुए उन्होंने कहा कि वे रोजगार बढ़ाने वाले उद्योगों को बढ़ावा देंगे ताकि युवाओं को रोजगार मिल सके।

प्रधानमंत्री ने विश्व समुदाय से कहा कि गरीबी व पर्यावरण जैसे मुद्दों पर वे दुनिया के साथ कदम से कदम मिलकर चलने को तैयार हैं। अपने 100 दिन के कामकाज का ब्योरा देते हुए उन्होंने कहा कि चार माह में 10 करोड़ बैंक खाते खुले हैं। अब विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त स्मार्ट सिटी की योजना पर काम कर रहे हैं। भारत को मैन्युफैक्चरिंग हब बनाना चाहते हैं। साथ ही कृषि आधारित उद्योग, पर्यटन व सेवा क्षेत्र को भी बढ़ावा देंगे। गत लोकसभा चुनाव को भारतीय लोकतंत्र के लिए टर्निंग प्वाइंट बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि 30 साल बाद जनता ने किसी दल को पूर्ण बहुमत दिया है। देश बड़े बदलाव की और बढ़ रहा है। हम अपने काम को गति देते हुए अपने सभी संस्थान व व्यवस्था को बेहतर सेवा देने को तत्पर करेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि लोग भारत क्यों आएं इसका भी उनके पास जवाब है।

चूंकि भारत में डेमोक्रेसी, डेमोग्राफी व डिमांड है। लोकतंत्र, आबादी और मांग के साथ ही यहां कम खर्च पर श्रेष्ठ मानव श्रम मौजूद है। इसलिए लोग आएं।

वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक निवेशक सम्मेलन

श्री नरेंद्र मोदी के संबोधन की मुख्य बातें

- जापान और कनाडा के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है और नए सहयोगियों की तलाश में है। यूएस, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका जैसे तमाम देशों से इस में शामिल होने की अपील करूंगा।
- तमाम बैंकों के प्रमुखों से अपील है कि विकासशील देशों के विकास में सहयोग करें।
- भारत वसुधैव कुटुंबकम की वकालत करता है और पिछले

अपने तमाम संबोधन में मैंने यह बात कही है। और आज 100 से अधिक देश के प्रतिनिधि एक छत के नीचे इकट्ठा हुए हैं।

- कुछ लोगों के सपने कुछ लोगों के निर्देशों से पूरे होते हैं। परिवार में तमाम ऐसी बातें होती हैं जिससे सदस्यों का लाभ होता है।
- धरती को बेहतर रहने की जगह बनाने का प्रयास है।
- हमें अब ग्लोबल इकोनोमी के बारे में भी सोचना है। हमें स्थाई और सभी के विकास की राह पर चलना है।
- हमारी सरकार लोगों के बीच विश्वास पैदा करने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि सोच में बदलाव का हम प्रयास कर रहे हैं।
- मेरी सरकार भरोसेमंद, पारदर्शी और निष्पक्ष नीतिगत वातावरण तैयार करने को लेकर प्रतिबद्ध।
- संयुक्त राष्ट्र के महासचिव किम योंग की तारीफ की जिन्होंने योग को पूरी दुनिया में मान्यता दिलवाने का काम किया।
- लगातार प्रयास की वजह से गुजरात में देशी विदेशी निवेशकों की रुचि बढ़ी है। उन्होंने कहा कि तमाम राज्यों ने ऐसी ही कोशिश आरंभ की है। केंद्र सरकार सभी राज्यों की इस मुहिम में सहयोग को प्रतिबद्ध है।
- हमारी संस्कृति संरक्षण को बढ़ावा देती है। इसके साथ हम विकास का मार्ग तय करेंगे। हम जो भी करेंगे हमारी विचारधारा ऐसी ही रहेगी।
- हम सात महीने की अल्प अवधि में निराशा तथा अनिश्चितता के माहौल को बदलने में कामयाब रहे हैं, हम अर्थव्यवस्था को गति देने के लिये काम कर रहे हैं।
- भारतीय लोकतंत्र में मार्च 2014 राजनीति में बदलाव का ऐतिहासिक पल था। 30 साल बाद एक पार्टी को लोगों ने बहुमत की सरकार दी। यह बदलाव के लिए वोट था। विकास के लिए वोट था। संशय को दूर करने के लिए वोट था।
- हम बदलाव की प्रक्रिया में हैं। कार्य-संस्कृति को बदलने की प्रक्रिया में है।
- दुनिया के देश हमारे साथ काम करने के लिये आगे आ रहे हैं, भारत गरीबी से लेकर पारिस्थितिकी तक से जुड़े मुद्दों पर वैश्विक नेताओं के साथ मिलकर काम करना चाहता है।
- हमें स्वस्थ और समावेशी आर्थिक वृद्धि की दिशा में काम करना है।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव सबसे बड़ी चिंता है। इसमें स्थिरता लाने और इसे नरमी से उबारने के रास्ते निकालने की जरूरत है।
- हमने योजना आयोग को बदलकर नीति आयोग बनाया है।
- इंश्योरेंस क्षेत्र और मेडिकल डिवाइस में निवेश की सीमा बढ़ाई है।
- पोर्ट्स बनाए जा रहे हैं। कम लागत में एयरपोर्ट बनाए जाने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं।
- इंफ्रास्ट्रकचर विकास पर जोर दिया जा रहा है। छोटे शहरों को केंद्र में रखकर भी योजनाएं बनाई जा रही हैं। ■

सकारात्मक वैश्विक ताकत के रूप में एकजुट हों प्रवासी भारतीय : नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 8 जनवरी को प्रवासी भारतीय समुदाय से मानवता के हित में सकारात्मक वैश्विक ताकत के तौर पर एकजुट होने का आह्वान किया। गांधीनगर के महात्मा मंदिर में प्रवासी भारतीय दिवस के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के दौरान स्मरण करते हुए कहा कि ठीक 100 वर्ष पहले एक प्रवासी – गांधी भारत आए और आज 100 साल के बाद सभी प्रवासी भारतीयों का एक प्रवासी गुजराती स्वागत करता है।

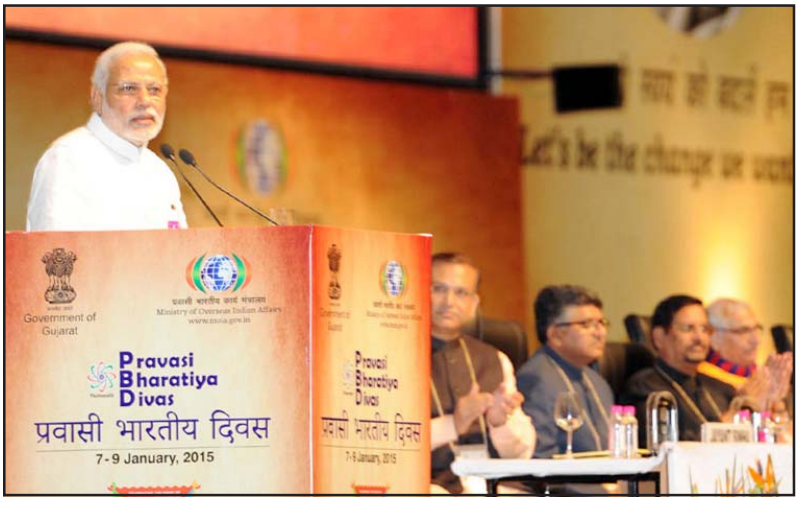

प्रधानमंत्री ने कहा कि 200 से अधिक देशों में प्रवासी भारतीय बसे हुए हैं और प्रवासी भारतीयों के माध्यम से ही भारत वैश्विक बना हुआ है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले भारतीयों ने अवसरों की खोज या ज्ञान और जानकारी हासिल करने के लिए विदेश यात्राएं की थीं। उन्होंने जोर देते हुए कहा . 'आज आपके लिए यह संकेत है कि भारत में असीम अवसर उपलब्ध हैं।' उन्होंने कहा कि आज विश्व, भारत को उम्मीद भरी नजरों से देखता है, समय तेजी से बदल रहा है और भारत बड़ी मजबूती से आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने प्रवासी भारतीयों से भारत के विकास में ज्ञान, दक्षता या कौशल सहित किसी भी संभावित तरीके से अपना योगदान करने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने गंगा नदी को स्वच्छ बनाने और इसे भारत की 40 फीसदी आबादी के लिए आर्थिक सशक्तिकरण का स्रोत बनाने के लिए विशेष रूप से 'नमामि गंगे' परियोजना का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि मुझे यह विश्वास है कि सभी प्रवासी भारतीय इसमें योगदान के लिए प्रेरित होंगे।

प्रधानमंत्री ने गुयाना, दक्षिण अफ्रीका और मश्वरीशस से आये गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि गुयाना में किस तरह से होली और दीपावली जैसे भारतीय त्यौहार हर्षोल्लास से मनाये जाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आज 8 जनवरी के दिन ही दक्षिण अफ्रीका में अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई थी। उन्होंने यह उल्लेख किया कि मॉरीशस में 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की जयंती भारत से भी कहीं ज्यादा उत्साह से मनायी जाती है।

प्रधानमंत्री ने विश्व में रह रहे प्रवासी भारतीयों से आगे बढ़ने, अपनी समान पहचान और विरासत पर गर्व करने तथा इस सामर्थ्य का सामूहिक रूप से इस्तेमाल करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अगर विश्व के किसी भी कोने में एक भी प्रवासी भारतीय मौजूद है तो भारत जीवंत है और उसके जरिए विश्व में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पदभार संभालने के बाद वह 50 देशों के प्रतिनिधियों से मिले हैं और वह यह बात पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि विश्व के सभी देश चाहे वे अमीर हों या गरीब, आज यह महसूस करते हैं कि भारत के साथ भागीदारी करके ही वे अपने उद्देश्य और लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह एक दुर्लभ अवसर है और यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर है कि वह इस अवसर का मानवता और भारत के लाभ के लिए इस्तेमाल करे।

श्री मोदी ने कहा कि पूरा विश्व भारत के साथ अपना लगाव दिखा रहा है और यह इस बात से साबित होता है कि संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के भारतीय प्रस्ताव पर 193 देशों

में से 177 देशों ने अपनी सहमति व्यक्त की है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रवासी भारतीय, भारत के लिए एक बड़ी ताकत हैं और उन लोगों तक पहुंच कर भारत विश्व स्तर पर अपना प्रभाव डाल सकता है। श्री मोदी ने कहा कि उन्हें इस बात की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि उन्होंने प्रवासी भारतीयों के साथ किए गए सभी वायदों को पूरा किया है। इनमें भारतीय मूल के कार्डधारकों के लिए आजीवन वीजा, पीआईओ और ओसीआई योजनाओं का विलय, 43 देशों के नागरिकों के लिए आगमन पर तत्काल वीजा और यात्रा संबंधी इलेक्ट्रॉनिक प्राधिकार पत्र शामिल हैं। ■

प्रवासी भारतीय दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री की द्विपक्षीय बैठकें

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 8 जनवरी को गुजरात की राजधानी गांधीनगर में प्रवासी भारतीय दिवस के मौके पर गुयाना के राष्ट्रपति डोनाल्ड आर. रामोतार से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने इस दौरान वर्ष 2014 में हुए ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर लैटिन अमेरिका के नेताओं के साथ अपनी बातचीत को स्मरण किया। उन्होंने बताया कि भारत अपना पहला सूचना प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केन्द्र लैटिन अमेरिकी महाद्वीप के गुयाना में खोलेगा।

भारत ने ईस्ट बैंक डेमेरारा-पूर्वी तट सड़क संपर्क परियोजना के लिए 5 करोड़ डॉलर के नये ऋण को मंजूरी दी है। भारत ने एक यात्री जहाज की सप्लाई के लिए रियायती कर्ज देने पर भी अपनी सहमति जता दी है, ताकि गुयाना उत्तरी क्षेत्र में आवागमन से जुड़ी समस्याओं से निजात पा सके। मॉरीशस के उप प्रधानमंत्री शोकाटैली सोधुन के साथ अपनी बैठक के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मश्वरीशस के प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ को उनकी हालिया चुनावी विजय पर बधाई दी और उन्हें फिर से भारत आने का न्यौता दिया। सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को मॉरीशस आने का निमंत्रण दिया। दोनों ही पक्षों ने बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के साथ-साथ समुद्री अर्थव्यवस्था से जुड़े मसलों पर आपसी सहयोग बढ़ाने में दिलचस्पी दिखाई। दक्षिण अफ्रीका की विदेश मंत्री श्रीमती मैते नकोआना-माशाबने के साथ अपनी बैठक के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्मरण करते हुए कहा कि आज अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस का स्थापना दिवस है। उन्होंने इस मौके पर साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ संघर्ष समेत दोनों देशों की साझा विरासत को भी स्मरण किया। दोनों ही पक्षों ने अनेक क्षेत्रों जैसे बुनियादी ढांचागत एवं रक्षा निर्माण में आपसी सहयोग बढ़ाने और द्विपक्षीय मंचों पर साझेदारी मजबूत करने में रुचि दिखाई।■

वाइब्रेंट गुजरात सम्मेलन

कंपनियों ने 25 लाख करोड़ के निवेश समझौतों पर हस्ताक्षर किए

भारत और विदेशों से आए उद्योगपतियों ने वाइब्रेंट्र गुजरात शिखर सम्मेलन में 25 लाख करोड़ रुपए के निवेश के 21,000 सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर किए गए। निवेश को लेकर हुये ये समझौते 2013 में हुये वाइब्रेंट गुजरात के मुकाबले दोगुने से भी अधिक हैं। वर्ष 2013 में 12 लाख करोड़ रुपए के निवेश की संभावना वाले 17,000 सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर किये गये थे। हाल में आयोजित पश्चिम बंगाल वैश्विक व्यावसायिक सम्मेलन के मुकाबले तो वाइब्रेंट गुजरात की मौजूदा राशि दस गुणा से भी अधिक है। हर दो साल में होने वाले इस सम्मेलन की शुरुआत वर्ष 2003 में हुई थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री थे। गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने इन आंकड़ों की घोषणा करते हुये कहा कि इनमें 1,225 रणनीतिक भागीदारी वाले समझौते भी हैं। सम्मेलन के दूसरे दिन वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने कहा कि भारत में आने वाले दिनों में निवेश कार्य तेजी से बढ़ेगा। नई सरकार ने देश से पूंजी के बाहर जाने की रफ्तार को रोक दिया है। पिछले तीन चार साल में ऐसा हो रहा था। श्री जेटली ने सरकार की और से निवेशकों को जल्द फैसले करने और स्थिर कर प्रशासन का भरोसा दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उस भरोसे को और बढ़ाया जिसमें प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत को व्यवसाय के लिहाज से सबसे बेहतर स्थल बनाया जायेगा। उन्होंने कहा, ''पूरी दुनिया ने हम पर भरोसा किया है और अब गुजरात सरकार और साढ़े छह करोड़ गुजरातियों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह वैश्विक उद्योगों के साथ सहयोग करें।'' ■

भारत ने लाखों नए बैंक खाते खोलकर विश्व रिकार्ड स्थापित किया

26 जनवरी को रखी गई अन्तिम तारीख से बहुत पहले ही प्रधानमंत्री की जन-धन योजना में 11.5 करोड़ बैंक खाते खुलाने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया। यह वित्तीय समावेशी योजना 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में रिकार्ड की गई है। 20 जनवरी 2015 को औपचारिक पत्रिका 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड'' में लिखा गया है- ''भारत सरकार ने एक विराट वित्तीय इतिहास कायम कर दिया है, जब आज इस बात की पुष्टि हुई कि इसकी वित्तीय समावेशी अभियान ने एक सप्ताह में सर्वाधिक बैंक खाते खो लेने का एक नया रिकार्ड कायम कर दिया गया है।'' प्रधान मंत्री ने अपने ट्वीट पर लिखा, ''प्रधान मंत्री जन धन योजना की अनुपम सफलता विशाल है। यह पूरे देश के लिए गौरव का विषय है।''

एक और ट्वीट में श्री मोदी ने कहा

शेष पृष्ठ 20 पर

जन-धन योजना

- जन-धन योजना के अन्तर्गत प्रत्येक भारतीय परिवार को शून्य बैलेंस खाता खोलने के लिए बैंक में एनरॉल कराना होगा। यह योजना खाता खोलने के लिए केवल भारत के परिवारों के लिए ही नहीं है बल्कि इसमें गरीब परिवारों के लिए विभिन्न प्रकार के लाभ हैं।
- प्रधानमंत्री ने अपने एक भाषण में कहा कि एक बार राष्ट्रपिता ने देश से सामाजिक अस्पृश्यता उन्मूलन करने को कहा था। आज के विश्व में, वित्तीय अस्पृश्यता बड़ी चिंता का विषय है और इससे लोग एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। अत: बैंक खाता खोलना पहला कदम है जिससे व्यवस्था से वित्तीय अस्पृश्यता समाप्त हो। इस योजना को विशाल जनसंख्या वाले भारत जैसे देश में आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाए। भारत में रहने वाला प्रत्येक परिवार आर्थिक चक्र का भाग है। अत: एक बार परिवार का खाता होने पर वे आर्थिक वाहन से जुड़ जाते हैं। अत: जब प्रत्येक व्यक्ति देश की व्यवस्था से जुड़ जाएगा तो यह अधिक तेज गति से चल सकेगी।
- इस योजना से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति को 30,000 रुपए का लाइफ कवर प्राप्त होगा। लाइफ कवर के साथ ही साथ उसे 1 लाख रुपए का दुर्घटना कवर भी प्राप्त होगा। यदि कोई व्यक्ति अपने बैंक खाते को सक्रिय रखता है और कुछ पैसा बचाता है तो खाता धारक अपने खाते से 5000 रुपए ओवरड्राफ्ट ले सकेगा।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना

(17.01.2015 तक खोले गए खाते)

(यह सचूना विभिन्न बैंको/एसएलबीसी द्वारा दी गई डाटा पर आधारित है)

Ø-l-		[kkrk dh l- ¼yk[k e½			:i;k MfcV dkM ¼yk[k e½	[kkrk e 'k"k ¼yk[k e½	'kU; cyl oky [kkrk dh l- ¼yk[k e½
		xkeh.k	'kgjh	;kx			
1	सार्वजनिक क्षेत्र बैंक	493.5	418.19	911.69	845.02	713881.17	653.1
2	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	170.84	30.29	201.13	125.01	145130.27	149.12
3	प्राइवेट बैंक	19.97	17.61	37.58	30.37	59795.75	24.9
	योग	**684-31**	**466-09**	**1150-40**	**1000-40**	**918807-19**	**827-1**

राष्ट्रीय अध्यक्ष का प्रवास : पश्चिम बंगाल

सारधा घोटाले में फंसे नेताओं को बचाने में लगी है राज्य सरकार : अमित शाह

पश्चिम बंगाल में तेजी से बढ़ रही भाजपा की जमीन को और विस्तार देने 20 जनवरी को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह बर्दवान पहुंचे। यहां आयोजित रैली में उन्होंने सारधा चिटफंड घोटाले व बर्दवान धमाके का उल्लेख कर प्रदेश सरकार को निशाने पर लिया। कहा, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का ध्यान सरकार चलाने पर नहीं है। वह सारधा चिटफंड घोटाले में फंसे अपने नेताओं को बचाने में ही लगी हैं। श्री शाह ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने बंगाल में वोट बैंक के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरे में डाल दिया।

प्रदेश में भाजपा सदस्यता अभियान को और बढ़ाने का आह्वान करते हुए श्री शाह ने सुश्री ममता को चेताया कि उनकी पार्टी का 'विजय रथ' अब नहीं रुक सकता। उन्होंने कहा, बंगाल में तेजी से बढ़ते भाजपा समर्थक जल्द ही तृणमूल कांग्रेस को गंगा में डुबा देंगे। शाह ने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी का शासन माकपा से भी बदतर है। पिछले साल बर्दवान में धमाका होने के बाद मुख्यमंत्री ने सही तरीके से जांच नहीं कराई और राष्ट्रीय जांच एजेंसी को भी सहयोग नहीं किया। वह बंगाल की जनता का पैसा सारधा चिटफंड कंपनी में डूबने से भी नहीं बचा सकीं।

रैली को संबोधित करते हुए श्री शाह ने कहा कि यहां विस्फोट बस इसलिए हुआ है क्योंकि तृणमूल कांग्रेस बांग्लादेशी घुसपैठियों को पनाह दे रही है। बर्दवान विस्फोट में दो बांग्लादेश आतंवादी मारे गए थे। उन्होंने कहा कि जब नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने देश को विकास की राह पर ले जाने का प्रयास किया तब तृणमूल सरकार ने बंगाल को पिछड़ेपन की राह पर ढकेल दिया। भाजपा बंगाल में विकास का काम करना चाहती है लेकिन ममताजी हमें वैसा करने की इजाजत नहीं दे रहीं। श्री शाह ने कहा बर्दवान विस्फोट तृणमूल की वोट बैंक की राजनीति का एक स्पष्ट उदाहरण है। यदि इस सरकार ने यहां हुए विस्फोट से एक वर्ष पहले कोलकाता में हुए विस्फोट की उचित जांच कराई होती तो बर्दवान विस्फोट नहीं हुआ होता। लेकिन वोट बैंक की

ममता बनर्जी का शासन माकपा से भी बदतर है। पिछले साल बर्दवान में धमाका होने के बाद मुख्यमंत्री ने सही तरीके से जांच नहीं कराई और राष्ट्रीय जांच एजेंसी को भी सहयोग नहीं किया। वह बंगाल की जनता का पैसा सारधा चिटफंड कंपनी में डूबने से भी नहीं बचा सकीं।

राजनीति की खातिर इसकी उचित जांच ही नहीं कराई।

2 अक्टूबर को हुए विस्फोट का उदाहरण देते हुए श्री शाह ने कहा, यहां तक कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी बर्दवान विस्फोट की जांच में जुटी है तो उन्होंने (ममता ने) जांच पर आपत्ति जताई है। विस्फोट के लिए ममता सरकार जवाबदेह है। उल्लेखनीय है कि बांग्लादेश के आतंकवादी संगठन जमात-उल-मुजाहिदीन की इस विस्फोट में संलिप्तता है। श्री शाह ने कहा, बंगाल एक सीमावर्ती राज्य है और वोट बैंक की राजनीति के कारण राज्य सरकार बांग्लादेशियों को घुसपैठ की अनुमति दे रही है जो देश की सुरक्षा के लिए खतरा है।

लोकसभा चुनाव के समय से ही बांग्लादेशी घुसपैठ पर तृणमूल पर निशाना साध रही भाजपा अध्यक्ष ने कहा, 'बंगाल के लोग इस सरकार (राज्य) को एक दिन के लिए नहीं चलने दे क्योंकि यह देश की सुरक्षा को क्षति पहुंचा रही है।' उन्होंने कहा, पिछली संप्रग सरकार 10 वर्षों में जो नहीं कर सकी, मोदी सरकार ने सात माह में कर दिखाया है। महंगाई पर नियंत्रण, ईधन के दाम कम करना या निर्बाध बिजली की आपूर्ति कर सकी है। केवल भाजपा ही विकास करेगी इसलिए तृणमूल को बंगाल से उखाड़ फेंकें और भाजपा को सत्ता में लाएं।

बैठक में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री राहुल सिन्हा, हाल में मंत्री पद छोड़ भाजपा में आए श्री मंजुल कृष्ण ठाकुर व भाजपा से जुड़ी अभिनेत्री रूपा गांगुली शामिल थीं।

रैली से पहले शाह ने संस्कृति लोकमंच में बंगाल भाजपा के शीर्ष नेताओं व कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। इसमें सलाह दी कि महज तृणमूल कांग्रेस की गलतियां निकालने से बंगाल में भाजपा आगे नहीं बढ़ेगी। काम के जरिये लोगों के बीच पैठ बनानी होगी। साथ ही भाजपा अध्यक्ष ने प्रदेश में सदस्यों की संख्या 75 लाख से एक करोड़ तक ले जाने की बात कही।■

तृणमूल सरकार के मंत्री मंजुल कृष्ण ठाकुर भाजपा में शामिल

पश्चिम बंगाल की बनगांव लोकसभा सीट पर 13 फरवरी को होने वाले उपचुनाव से पहले तृणमूल सरकार के मंत्री श्री मंजुल कृष्ण ठाकुर ने 15 जनवरी को पार्टी नेतृत्व पर मनमाने तरीके से काम करने का आरोप लगाते हुए पार्टी छोड़ दी और भाजपा में शामिल हो गए। शरणार्थी राहत और पुनर्वास मंत्री श्री मंजुल कृष्ण ने राज्य सरकार और पार्टी पर मनमाने तरीके से काम करने का आरोप लगाया और फिर अपने बेटे श्री सुब्रत ठाकुर के साथ भाजपा में शामिल

हो गए। श्री ठाकुर ने कहा, 'मैंने आज मेरे बेटे के साथ भाजपा में शामिल होने का फैसला किया क्योंकि मुझे लगता है कि तृणमूल कांग्रेस अब ईमानदार और अच्छे नेताओं के लिए नहीं रही। तृणमूल कांग्रेस ने मुझे मेरे मटुआ समुदाय के कल्याण के लिए काम नहीं करने दिया।' इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री राहुल सिन्हा ने मंजुल और उनके बेटे का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि तृणमूल कांग्रेस के पहले मंत्री के भाजपा में शामिल होने के साथ बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के पतन की शुरुआत हो गई है। 13 फरवरी को बनगांव लोकसभा के लिए होने वाले उपचुनाव से पहले ठाकुर का भाजपा में आना महत्वपूर्ण माना जा रहा है चूंकि इस क्षेत्र में मटुआ समुदाय के मतदाताओं की बड़ी संख्या है। यह सीट ठाकुर के बड़े भाई और तृणमूल सांसद कपिल कृष्ण ठाकुर के निधन के बाद खाली हो गई थी।■

दो वैश्विक शिखर सम्मेलनों का किस्सा

✍ अरुण जेटली

कुछ सप्ताह पहले दो राज्य सरकारों-पश्चिम बंगाल और गुजरात ने अपने-अपने यहां वैश्विक शिखर सम्मेलनों का आयोजन किया। मुझे उन दोनों में शामिल होने का अवसर मिला। पश्चिम बंगाल वैश्विक शिखर सम्मेलन, राज्य में निवेश को आकर्षित करने के लिए राज्य सरकार की एक पहल थी।

पश्चिम बंगाल एक प्रमुख औद्योगिक राज्य था। 1960 के दशक के अन्त में यहां नक्सली समस्या की शुरुआत हुई, जो वाम मोर्चा सरकार की नीतियों के कारण बढ़ गई, उद्योग राज्य से बाहर हो गए। कोलकाता पश्चिम बंगाल के विकास में वृद्धि का प्रमुख केन्द्र है।

राज्य के पास सफल कृषि है। पश्चिम बंगाल के पास बड़ी मात्रा में बौद्धिक पूंजी है और पिछले एक दशक में यहां सूचना प्रौद्योगिकी में बड़े पैमाने में तेजी आई है। पश्चिम बंगाल को एक बार फिर औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित करने की जरुरत है। मेरे सहयोगी श्री नितिन गडकरी भी शिखर बैठक में शामिल हुए। वह कोलकाता-सिलीगुड़ी राजमार्ग बनाने के लिए राज्य की मदद करने को तैयार हैं। अगर एक ऐसे राजमार्ग के साथ-साथ औद्योगिक गलियारा भी बना दिया जाए तो यह पश्चिम बंगाल को गति प्रदान करेगा। कुछ नये शहरों को बनाना, बेहतर बुनियादी ढांचा, एक औद्योगिक गलियारे का निर्माण, समुद्री संसाधनों का अधिक प्रभावकारी इस्तेमाल करना ही राज्य का भविष्य का एजेंडा होना चाहिए।

निवेश पर एकाधिकार के लिए भारत के राज्य एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। मुझे इस बारे में जरा भी संदेह नहीं है कि जो लगातार और एक समान सुधारों और व्यवसाय अनुकूल नीतियों पर जोर दे रहे हैं वह सफल अवश्य होंगे।

मैं खासतौर से इस तथ्य से उत्साहित हो गया कि निर्माण और सेवा क्षेत्र दोनों से जुड़े प्रतिनिधि सम्मेलन में शामिल हुए। राज्य में अब लगातार यथानुपात सुधार करने और व्यापार अनुकूल कदम उठाए जाने की जरूरत है ताकि वर्तमान और संभावित निवेशकों के मन में विश्वास पैदा किया जा सके। केन्द्र सरकार पश्चिम बंगाल के विकास में मदद करना चाहती है। वस्तु और सेवा कर लागू कर देने से पश्चिम बंगाल की आमदनी बढ़ेगी। कोयला ब्लॉकों की नीलामी से होने वाला मुनाफा राज्य की आमदनी बढ़ाएगा। नीति आयोग का राज्य सरकार के हाथों में मौजूद विभिन्न योजनाओं को विकेन्द्रित करने का इरादा है।

गुजरात बिजनस शिखर सम्मेलन का शानदार आयोजन किया गया। गांधीनगर में महात्मा मंदिर एक भव्य सम्मेलन केन्द्र था। यह सातवां वाइब्रेंट गुजरात शो था जिसका आयोजन 2003 से किया जा रहा है। प्रधानमंत्री और केन्द्र सरकार के अन्य मंत्रियों ने इस वर्ष के वाइब्रेंट गुजरात में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सच्चाई तो यह है कि दस वर्ष बाद केन्द्रीय मंत्रियों ने इस सम्मेलन में शिरकत की। प्रधानमंत्री, मंत्री, दुनिया भर से आए नीति निर्माता, बड़े व्यावसायिक घराने (घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही) वाइब्रेंट गुजरात में मौजूद थे। वाइब्रेंट गुजरात देश का प्रमुख आर्थिक सम्मेलन बन चुका है। इस वर्ष वाइब्रेंट गुजरात में भारत की मार्केटिंग की गई।

कुछ महीने पहले मध्य प्रदेश ने अपनी निवेशकों की बैठक आयोजित की थी। समाचार माध्यमों की खबरों से संकेत मिलता है कि निकट भविष्य में महाराष्ट्र भी अपने यहां ऐसी ही बैठक आयोजित करेगा। पश्चिम बंगाल और गुजरात शिखर सम्मेलनों में मेरी भागीदारी ने मेरे अंदर उत्साह भर दिया। आयोजनों का पूरा-पूरा मकसद निवेश को आकर्षित करना था। निवेश पर एकाधिकार के लिए भारत के राज्य एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। मुझे इस बारे में जरा भी संदेह नहीं है कि जो लगातार और एक समान सुधारों और व्यवसाय अनुकूल नीतियों पर जोर दे रहे हैं वह सफल अवश्य होंगे। ■

(लेखक केंद्रीय वित्त एवं सूचना प्रसारण मंत्री हैं)

सदस्यता अभियान पर विशेष

पार्टी में आपका स्वागत है!

✍ विनय सहस्रबुद्धे

भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने बड़ी बुद्धिमानी से एक ऐसे समय में जब पार्टी ठीक-ठाक से चल रही है, भाजपा को निचले स्तर से लेकर पुनर्गठित करने के लिए सामान्य सदस्यता अभियान को एक शक्तिशाली उपकरण बनाया है, जिसमें उन्होंने राजनैतिक सदस्यता अभियान को पुनर्भाषित कर दिया है। भाजपा के लिए, इससे बेहतर कोई और सुअवसर नहीं हो सकता है जिससे लोगों के पास पहुंचा जाए और प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जो सद्भावना अपने लिए तैयार की है, उस जनाधार को तैयार किया जाए। मोदी जी ने कुंठा और निराशा के वातावरण को सफलतापूर्वक समाप्त कर डाला है। इससे लोकतांत्रिक सुशासन में फिर से लोगों का भरोसा हुआ है।

पूरे विश्व में देखा गया है कि राजनीतिक दलों में लोगों की आस्था समाप्त हो जा रही है किन्तु, यह जानते हुए कि लोगों के पास कोई विकल्प नहीं है कि वे उनमें से किसी एक या अन्य किसी पार्टी का चुनाव करें, दलों ने संगठनात्मक ढांचा खड़ा करने की बात भुला दी है।

भारत जैसे देशों में अपने घर को ठीक करने का प्रयास बहुत कम हुआ है, जहां 1300 से अधिक पार्टियां रजिस्टर्ड है, जिनमें से बहुत सी ऐसी पार्टियां हैं, चुनाव न होने के समय जिनका अता-पता नहीं मालूम होता है। अधिकतर पार्टियां अपने आपको चुनाव लड़ने तक ही सीमित रखती है। परिणामत:, ऐसी पार्टियों के समय-समय पर हंगामा खड़ा किए जाने पर एक 'न्यूसेंस' वैल्यू का प्रयास ही माना जाता है। अधिकांश दलों का कुनबापरस्ती का प्रचार किसी उद्देश्यपरक धरातल के लिए गहरे संकट का अनुभव कराता रहता है, जिससे मशीनी राजनीति की प्रवृत्तियां पैदा होती हैं।

भारत जैसे देशों में अपने घर को ठीक करने का प्रयास बहुत कम हुआ है, जहां 1300 से अधिक पार्टियां रजिस्टर्ड है, जिनमें से बहुत सी ऐसी पार्टियां हैं, चुनाव न होने के समय जिनका अता-पता नहीं मालूम होता है। अधिकतर पार्टियां अपने आपको चुनाव लड़ने तक ही सीमित रखती है।

पिछले कुछ वर्षों से ऐसी स्थिति ने दलों के पतन में काफी योगदान दिया है। बहुत लोगों के लिए राजनीति पूरे दिन का कारोबार और चुनाव जीतने का टेक्नीक भर रह गई है। धन, बल, जाति की प्रभुता और मनमाने और अपारदर्शी ढंग से प्रत्याशियों की चयन प्रक्रिया की प्रभुता के कारण चुनावी निर्णयों को जीतने के लिए अलग ढंग से योगदान दिया है। 'इकानामिस्ट' के अनुसार बहुत से मामलों में, चुनावी विजय में लोगों के जनाधार जीतने की क्षमता के कहीं अधिक पार्टी की इस तकनीक को जाता है। फलस्वरूप, पार्टी संगठन को पुष्ट बनाना गौण पड़ जाता है जिससे पार्टियां निरर्थक पड़ जाती है। पार्टियों के सामने दो उद्देश्य रहते हैं कि वे सत्ता प्राप्त करें और सत्ता में बने रहें जो राजनीतिक पार्टियों का प्रमुख एजेण्डा होता है, जिससे प्रतिस्पर्धी समझौते होते रहते हैं।

राजनैतिक नेताओं ने जिसे लोकतंत्र की लहर का अंत होने के बाद ''विचारधारा का अंत'' बन कर काम करती नजर आने लगी है, जिससे विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के बीच दरार पैदा होने लगी है। आश्चर्य नहीं कि वैचारिक पार्टी कार्यकर्ता खतरनाक दिखाई पड़ने लगे हैं और अधिकांश पार्टियों में 'अवसरवादी कार्यकर्ता भर गए है और वे पार्टी के प्रति वफादारी रखने की अपेक्षा नेताओं के प्रति निष्ठा रखते हैं। इससे विश्व भर में अधिकांश लोकतंत्र प्रणाली वाली राजनीतिक पार्टियों का संस्थागत पतन हुआ है।

इस प्रसंग में देखते हुए श्री शाह के नेतृत्व में भाजपा का भारी पैमाने पर सदस्यता अभियान का महत्व कोई कम नहीं है। इस अभियान की अनेक अपूर्व विशेषताएं है, जिसमें यह पहला अभियान है जिसे सैलफोन के माध्यम से चलाया गया है। टेक्नालाजी ने इस प्रक्रिया को अत्यधिक लोकतांत्रिक, समावेशी और अत्यंत सरल तथा सदस्यता अनुसार बनाया है। भाजपा ने दिखा दिया है कि पार्टी में शामिल होने वाला व्यक्ति अपने विवेक से शामिल होता है। परिणामत:, यह पुनर्भाषित पार्टी अभियान आधुनिक युग के अनुरूप है।

भाजपा ने इस अभियान को 'सशक्त

भाजपा-सशक्त भारत' नाम दिया है। इसके अलावा, अभियान का नारा 'साथ आए, देश बनाएं' का उद्देश्य भी किसी राजनैतिक दल में शामिल होने के कार्य को सम्मानजनक बनाना है। भाजपा की इस महत्वाकांक्षी योजना में 31 मार्च तक करोड़ों देशवासियों को सदस्य बनाना है, जिसके बाद नए सदस्यों का सम्पर्क किया जाएगा और पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित होंगे। लाभकारी रूप से इन महत्वाकांक्षी कार्यक्रम करने तथा विकासात्मक एवं सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित करना बहुत बड़ी चुनौती है, परन्तु यह कैडर-आधारित पार्टी के लिए बहुत बड़ी बात नहीं है। भाजपा पार्टी कैडर में नई ऊर्जा भरना चाहती है, जिससे पार्टी के पूरे संगठनात्मक ढांचे को बदला जा सके। यदि योजनानुसार काम हुआ तो लोकतंत्र में राजनैतिक पार्टियों की संस्थागत प्रभुता बहाल हो सकती है।

यदि लोकतांत्रिक प्रणाली को सुशासन प्रदान करना है तो संगठनात्मक रूप से स्वस्थ राजनीतिक पार्टियों के रूप में अच्छे कार्यकर्ताओं की आवश्यक है।

बिना राजनैतिक पार्टियों की लोकतांत्रिक व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। अतः इन्हें बेहतर संस्थागत ढंग के मार्ग से शक्तिशाली बनाना ही एकमात्र समाधान है। स्पष्ट है कि इसे नए सदस्य बनाकर, नया रक्त सामने लाकर और नए विचार उजागर करके ही पूरा किया जा सकता है। आखिरकार नई राजनीति को नए विचारों की आवश्यकता होती, जिससे उसी के अनुरूप राजनीति ढाली जा सके।■

पृष्ठ 7 का शेष...

हुए कहा कि वह शपथग्रहण के लिए मेट्रो से आए थे। अब भी क्या केजरीवाल मेट्रो से कहीं जाते हैं? उन्होंने कहा कि आम आदमी ने झूठ बोलने का रिकॉर्ड बनाया है। यही वजह है कि बनारस की जनता ने केजरीवाल को वापस भेज दिया।

रैली को संबोधित करते हुए शहरी विकास मंत्री श्री वेंकैया नायडू ने कहा, 'भाजपा लोकसभा में अच्छा काम कर रही है और अगर दिल्ली में भी जनता ने हमें चुना तो हम बहुत अच्छा काम करेंगे, जिस-जिस राज्य में लोगों ने भाजपा को चुना है वहां विकास हो रहा है। उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया कि आने वाले पांच साल में एक लाख नए मकान बनेंगे और ये झुग्गीवालों को दिए जाएंगे। उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह राज्यसभा में काम करने से रोक रहा है। श्री नायडू ने श्री अरविंद केजरीवाल पर भी निशाना साधा और कहा कि वह जिम्मेदारी मिलने पर भाग गए।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा, 'हरियाणा में भाजपा ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई है और अब वही लहर दिल्ली की ओर बढ़ रही है। लोग दिल्ली के विकास के लिए भाजपा को वोट दें।'

इस रैली में केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन व श्री पीयूष गोयल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रभात झा, प्रो. जगदीश मुखी, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सतीश उपाध्याय, प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा सहित वरिष्ठ नेतागण रैली में उपस्थित थे। इसके अलावा हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस और झारखंड के मुख्यमंत्री श्री रघुबर दास भी रैली में मौजूद थे। ■

पृष्ठ 15 का शेष...

है "हमने प्रधानमंत्री जन-धन योजना इस उद्देश्य से शुरू की थी जिससे हम गरीबों को अपनी वित्तीय व्यवस्था से जोड़ सकें। जिस तरह से यह योजना व्यापक स्तर पर सफल हुई, वह हर्ष का विषय है।"

श्री मोदी के नेतृत्व में राजग सरकार की वित्तीय योजना का तेजी से विस्तार हुआ, जिसमें हमने देखा कि 28 अगस्त को इस योजना में थोड़ी सी अवधि में ही दस करोड़ से भी अधिक खाते खोले गए। नवीनतम आंकेड़ों के अनुसार 17 जनवरी तक 11,50,40,000 (ग्यारह करोड़ 50 लाख 40 हजार) खाते खोले गए। इस अवधि का मूल लक्ष्य 7.5 करोड़ घरों तक पहुंचना था।

मीडिया को संबोधित करते हुए, वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने 20 जनवरी को कहा कि 'गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड' ने प्रमाणपत्र दिया है कि "एक सप्ताह में वित्तीय समावेशी अभियान के भाग के रूप में सर्वाधिक बैंक खाते खोले गए और इसे वित्तीय सेवा विभाग, भारत सरकार ने 23 अगस्त से 29 अगस्त 2014 तक प्राप्त कर लिया है।

मंत्री महोदय ने यह देखा है कि इस योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का बड़ा योगदान है। इतने विशाल स्तर पर सर्वे इससे पहले केवल राष्ट्रीय जनगणना का ही था। ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 227,000 क्षेत्रों में यह सर्वे आयोजित हुआ। श्री जेटली ने कहा कि "अभी तक 99.74 घरों का सर्वेक्षण हो चुका है।"■

कांग्रेस के उबरने के आसार नहीं

✍ बलबीर पुंज

मध्य स्तरीय कांग्रेसी नेताओं की खामोशी जो कांग्रेस कार्यसमिति के हालिया निर्णय के बाद छा गई, वह हो सकता है उस ग्रैंड ओल्ड पार्टी के भविष्य का संकेत हो जो एक के बाद दूसरी त्रासदी से गुजर रही है। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक से एक दिन पूर्व दिल्ली विधानसभा चुनाव के मौसम की परिचायक रैलियां हो रही थीं। अगले दिन अखबार में भाजपा की चुनौती नजर आई, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रभाव की कहानी कह रही थी। भाजपा की रैली से जुड़ी खबरों में आम आदमी पार्टी नेता अरविंद केजरीवाल की प्रति-चुनौती का भी संज्ञान लिया गया। लेकिन उस कांग्रेस का कोई उल्लेख नहीं था जिसने 15 वर्षों तक दिल्ली पर शासन किया है। यद्यपि पार्टी ने भी अभी-अभी अपनी चुनावी मौजूदगी की घोषणा की थी।

यदि अबसे कांग्रेसियों ने स्वयं स्वीकार कर लिया है कि दिल्ली विधानसभा में उसकी मौजूदगी 10 फरवरी को और कम हो जाएगी, कार्यसमिति की बैठक, जो उस दिन हुई जब प्रचार आरम्भ हुआ, के संदेश से उन्हें भाजपा और आप की चुनौती का सामना करने लायक ऊर्जा प्राप्त नहीं हुई। दो गांधियों का नेतृत्व नाममात्र का था। वह पार्टी जिसमें विभिन्न राज्यों के उल्लेखनीय नेता होते थे, और महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल अग्रणी भूमिका निभाते थे। आज उस राष्ट्रीय दल के सामने मात्र एक राष्ट्रीय संगठन बनकर सीमित रह जाने का खतरा मंडरा रहा है। 2013 के उत्तरार्ध के विधानसभा चुनावों से आरम्भ होकर, मई 2014 के आम चुनावों से होकर और बाद में राज्य स्तरीय चुनावों के समुच्चयों में, एक काला साया पार्टी पर मंडराता रहा है और यह और भी समस्याजनक बन गया है क्योंकि पार्टी की सम्भावनाएं बद से बदतर हो गई हैं।

जबकि अधिकतर विश्लेषकों का कहना है कि यह रुझान आने वाले विधानसभा चुनावों में जारी रहेगा और 2017 तक खिचेगा, और यह कि भाजपा सम्भवत: उत्तर प्रदेश, बिहार, असम और पश्चिम बंगाल में भी सत्तासीन होगी, ऐसे में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के पास आगे देखने को क्या है? असम में, कांग्रेस का प्रदर्शन लोकसभा चुनावों में बहुत खराब रहा, और बोडोलैंड क्षेत्रों में हालिया रक्तपात ने वह समर्थन भी छीन लिया है जो पार्टी को जनजातीय क्षेत्रों से मिलने की उम्मीद हो सकती थी। यह भी बांग्लादेश से अवैध प्रवासियों का भारी अंतरप्रवाह उन अंतर्जात समुदायों के लिए खतरा बनता जा रहा है, और यह एक और भी कारक है जो असम में व्यास हो रही सत्ता विरोधी भावना में शामिल हो सकता है।

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में, पार्टी नेताओं ने 'अध्यादेश राज' पर ध्यान केंद्रित करने प्रयास किया और कहा कि पार्टी केंद्र सरकार की तानाशाही से लड़ेगी। यह रणनीति केवल अपनी राजनीतिक रणनीति को संशोधित करने की कांग्रेस की अक्षमता को रेखांकित करती है। दशक के इस हिस्से में, कांग्रेस, केंद्र और बहुत से उसके कार्यकाल को नीति-विकलांगता का दौर कहा गया। यही कारण है कि जनता ने श्री मोदी के पक्ष में मत दिया, जिन्हें उसने एक निर्णयकारी और दृढ़ नेता के रूप में देखा। अत: जब यह सरकार, मतदाताओं के अनुरूप बनने के लिए विचार बनाती है, तो ऐसे में दमित और कमजोर हो चुकी पूर्व सत्ताधारी पार्टी, अप्रासंगिक मुद्दे उठाकर विधायी सुधारों को बाधित करने का प्रयास करती है।

यदि अबसे कांग्रेसियों ने स्वयं स्वीकार कर लिया है कि दिल्ली विधानसभा में उसकी मौजूदगी 10 फरवरी को और कम हो जाएगी, कार्यसमिति की बैठक, जो उस दिन हुई जब प्रचार आरम्भ हुआ, के संदेश से उन्हें भाजपा और आप की चुनौती का सामना करने लायक ऊर्जा प्राप्त नहीं हुई। दो गांधियों का नेतृत्व नाममात्र का था। वह पार्टी जिसमें विभिन्न राज्यों के उल्लेखनीय नेता होते थे, और महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल अग्रणी भूमिका निभाते थे। आज उस राष्ट्रीय दल के सामने मात्र एक राष्ट्रीय संगठन बनकर सीमित रह जाने का खतरा मंडरा रहा है।

संसद के शीत सत्र में, विधायी कार्य के कुछ दिन दोनों सदनों में बेकार गए क्योंकि विपक्ष ने सहयोग देने से इनकार कर दिया। उदाहरण के लिए विपक्ष चाहता था कि प्रधानमंत्री उस विवाद पर बयान दें जो एक गैर सरकारी संगठन द्वारा उठाया गया है। प्रधानमंत्री, आखिर क्यों इस प्रकृति की किसी चीज की जिम्मेदारी लें, न लें या आलोचना करें? इसके अतिरिक्त, हमारे जैसे विविधतापूर्ण देश में, सदैव ऐसे तत्व मिलेंगे, जिनमें से कुछ सत्ताधारी दल के प्रति मित्रवत भी होंगे, जो अपना खुद का एजेंडा आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। कांग्रेस, जिसने दशकों तक सत्ता का आनंद लिया है, निश्चित रूप से इस तथ्य से परिचित है जिसके चलते प्रधानमंत्री ने ऐसे मुद्दों पर कोई बयान दिया हो। उदाहरण के लिए क्या उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान उनके मंत्रियों द्वारा दिए गए विवादास्पद भाषणों पर, श्री मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री के तौर पर बयान दिया?

दिसंबर 2014 में, कांग्रेसनीत विपक्ष प्रधानमंत्री मोदी को एक ऐसे राजनीतिक विवाद में फांसने का प्रयास कर रहा था जिसके मामले में न तो उनको न उनकी पार्टी को कोई लेना-देना था। श्री मोदी ने चाल को भांप लिया और आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। तब विपक्षी दलों ने संसदीय कार्यवाही बाधित कर व महत्वपूर्ण विधायनों को लंबित कर आघात करने का प्रयास किया। इसके चलते सरकार के पास इस हथियार का इस्तेमाल करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था जो संविधान ने उसे ऐसी स्थितियों में प्रयोग करने के लिए दिया है। यह विडंबना है कि कांग्रेस ने, आपातकाल लागू करने व संपूर्ण विपक्ष को जेल में डाल देने की विरासत के साथ वर्तमान सरकार को तानाशाहीपूर्ण बताया है और 'एक राष्ट्र, एक दल, एक नेता' का नारा बुलंद किया है। भूमि अधिग्रहण कानून जो कांग्रेस ने 2013 में पारित किया था वह इसका शास्त्रीय उदाहरण है कि किस तरह एक समूह राज्य की नीतियों को निर्देशित करता है जिसने न केवल राष्ट्रीय संवृद्धि व प्रगति को नीचे गिरा दिया बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं को भी विकृत कर दिया।

देखने की बात है, कांग्रेसनीत सरकार ने तब अपनी आखें बंद कर ली थीं जब भूमि कब्जियाने वाले लोगों ने हरियाणा और राजस्थान में सैंकड़ों एकड़ खेतों पर कब्जा कर लिया। मामला जब सामने आया, तब न केवल विपक्ष बल्कि कुछ जिम्मेदार सरकारी अधिकारियों ने भी भूमि सौदों पर आपत्ति जताई। पुनः यह विडंबना है कि कुछ ऐसे नेता जिन्होंने भूमि हथियाने वालों को किसानों का उत्पीड़न करने का मौका दिया वे अब वर्तमान सरकार को किसान विरोधी सिर्फ इसलिए कह रहे हैं क्योंकि उसने भू-अधिग्रहण प्रक्रिया का इसलिए तर्कसंगीकरण किया है जिससे औद्योगीकरण को गति दी जा सके, जो राष्ट्रीय संवृद्धि के लिए आवश्यक है।

कांग्रेस के प्रवक्ता ने मांग की है कि युवराज पार्टी की पूरी तरह कमान सम्भालें, क्योंकि दोहरी शक्ति केंद्र व्यवस्था काम नहीं कर रही है। मगर ये भटकाने वाली युक्तियां हैं। कांग्रेस, लंबे समय से एक परिवार पर आश्रित रही है, वह खो चुकी है, शीर्ष पर श्रेष्ठ नेतृत्व की सम्भावना कार्यकर्ता स्तर से उठनी चाहिए मगर यह बात उसके मूल को चुनौती देती है। किसी ने कांग्रेस की दुर्दशा का सही वर्णन किया है: यदि गांधी-नेहरू परिवार के सदस्य पार्टी के शीर्ष पर काबिज रहेंगे, तो उसका पतन हो जाएगा, उनके बिना, यह टुकड़ों में विभाजित हो सकती है। ■

(साभार- पायनियर)

कांग्रेसनीत सरकार ने तब अपनी आखें बंद कर ली थीं जब भूमि कब्जियाने वाले लोगों ने हरियाणा और राजस्थान में सैंकड़ों एकड़ खेतों पर कब्जा कर लिया। मामला जब सामने आया, तब न केवल विपक्ष बल्कि कुछ जिम्मेदार सरकारी अधिकारियों ने भी भूमि सौदों पर आपत्ति जताई। पुनः यह विडंबना है कि कुछ ऐसे नेता जिन्होंने भूमि हथियाने वालों को किसानों का उत्पीड़न करने का मौका दिया वे अब वर्तमान सरकार को किसान विरोधी सिर्फ इसलिए कह रहे हैं क्योंकि उसने भू-अधिग्रहण प्रक्रिया का इसलिए तर्कसंगीकरण किया है जिससे औद्योगीकरण को गति दी जा सके, जो राष्ट्रीय संवृद्धि के लिए आवश्यक है।

कांग्रेस, लंबे समय से एक परिवार पर आश्रित रही है, वह खो चुकी है, शीर्ष पर श्रेष्ठ नेतृत्व की सम्भावना कार्यकर्ता स्तर से उठनी चाहिए मगर यह बात उसके मूल को चुनौती देती है। किसी ने कांग्रेस की दुर्दशा का सही वर्णन किया है: यदि गांधी-नेहरू परिवार के सदस्य पार्टी के शीर्ष पर काबिज रहेंगे, तो उसका पतन हो जाएगा, उनके बिना, यह टुकड़ों में विभाजित हो सकती है।

अटलजी का प्रथम अध्यक्षीय भाषण : भाग - 4

अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा

✍ अटल बिहारी वाजपेयी

पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी 6 अप्रैल 1980 को भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के समय प्रथम अध्यक्ष बने थे। बम्बई (अब मुम्बई) में आयोजित राष्ट्रीय परिषद (28-30 दिसम्बर 1980) में अटलजी के अध्यक्षीय भाषण ने पार्टी कार्यकर्ताओं में नई स्फूर्ति को जागृत किया। यह सचमुच में एक ऐतिहासिक भाषण था। गतांकों से हम उनके भाषण को कमल संदेश के सुधी पाठकों के लिए शृंखलाबद्ध प्रकाशित कर रहे हैं। प्रस्तुत है चौथा भाग:-

अनिवार्य मताधिकार प्रयोग

मताधिकार के उपयोग को अनिवार्य करना भी जरूरी है। देश में अब तक 7 आम चुनाव हो चुके हैं। किंतु ऐसे मतदाताओं की संख्या काफी है जो चुनाव के प्रति सर्वथा उदासीन हैं और जिन्होंने मतदान में भाग नहीं दिया। 1977 की तरह 1980 का चुनाव भी अधिक महत्वपूर्ण मुद्दों पर लड़ा गया था, फिर भी 35 करोड़ 40 लाख 28 हजार मतदाताओं में से केवल 20 करोड़ 12 लाख 69 हजार ने मताधिकार का उपयोग किया। इसका अर्थ यह है कि 15 करोड़ से अधिक मतदाताओं ने वोट डालने की आवश्यकता ही नहीं समझी। अनेक लोकतंत्रवादी देशों में मताधिकार का प्रयोग अनिवार्य है।

विदेश नीति

वर्तमान सरकार ने नीति को दलगत राजनीति का खिलौना बनाकर इस मामले में गत तीन देशों में विकसित राष्ट्रीय सहमति को गहरी क्षति पहुंचाई है।

1977 में जनता पार्टी ने चुनाव का मुख्य मुद्दा घरेलू मामलों को बनाया था और चुनाव जीतने के बाद विदेशी नीति की निरंतरता पर बल दिया था। 1980 में कांग्रेस (आई) ने विदेश नीति को न केवल चुनाव के अखाड़े में घसीटा, बल्कि उसे अपने चुनाव अभियान का एक प्रमुख विषय बनाया।

यदि आज पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों में कुछ ठिठुरन दिखाई देती है तो उसका आरंभ चुनाव के दौरान दिए गए इन भाषणों में खोजा जाना चाहिए कि 'भारत के छोटे-छोटे पड़ोसी हमें आंखें दिखा रहे हैं।'

पड़ौसी देशों से बिगड़े सम्बन्ध

अच्छे पड़ोसीपन तथा लाभदायक द्विपक्षवाद की नीति का अवलम्बन कर जनता सरकार ने 30 वर्षों में पहली बार, इस क्षेत्र में विश्वास का वातावरण बनाने में सफलता पाई थी। पड़ोसी देशों के साथ व्यवहार करने के पुराने तौर तरीकों को वापस लाकर इस वातावरण को 12 मास के भीतर ही बिगाड़ दिया गया।

यह आरोप सर्वथा निराधार तथा विद्वेषपूर्ण है कि जनता सरकार ने पड़ोसी देशों की वाहवाही लूटने के लिए राष्ट्र के महत्वपूर्ण हितों की बलि चढ़ा दी। पाकिस्तान के साथ सलाल का समझौता उन्हीं शर्तों पर किया जिन पर पुरानी सरकार समझौता करना चाहती थी, किंतु करने में विफल रही थी।

जहां तक गंगाजल के बंटवारे का सवाल है,1975 में सरकार ने बंगलादेश के साथ जो समझौता किया था उसमें भारत को केवल 11 हजार से 16 हजार क्यूसेक तक पानी मिला था। जनता सरकार पानी की मात्रा को बढ़ाकर 20 हजार 500 क्यूसेक तक ले जाने में सफल हुई।

अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप : ढुलमुल नीति

अफगानिस्तान में सोवियत संघ के सैनिक हस्तक्षेप, जो अब लगभग कब्जे का रूप धारण कर चुका है, के प्रश्न पर भारत सरकार की ढुलमुल नीति ने विश्व में भारत की छवि को धूमिल किया है, उसे पड़ोसी देशों, गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों और इस्लामी मुल्कों से अलग-अलग कर दिया है।

सोवियत सैनिक हस्तक्षेप के विरुद्ध

अपनी आवाज असंदिग्ध रूप से उठाने में असफल रहने के लिए हमारे परंपरागत मित्र तथा स्वतंत्रता प्रिय अफगान हमें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

सोवियत राष्ट्रपति श्री ब्रेझनेव के हाल में ही भारत आगमन के अवसर पर जारी की गई संयुक्त घोषणा में अफगानिस्तान के बारे में एक शब्द तक नहीं कहा गया। इस बारे में भारत का मौन उसकी दो-मुंही आवाज से भी अधिक मुखर है।

संदिग्ध कम्पूचिया नीति

कम्पूचिया में वियतनामी सेना के बल पर टिकी सरकार को मान्यता देने का भारत सरकार का फैसला भी किसी सिद्धांत विहीन और भारत की विदेशी नीति की स्वतंत्रता के बारे में दुनिया में और विशेषकर दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में, संदेह जगाने वाला है।

यहां यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि जनता सरकार ने चीन के साथ संबंधों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया को प्रमाणिकता से आगे बढ़ाने का प्रयास करते हुए भी वियतनाम पर चीन के हमले की निन्दा करने में किसी प्रकार की कोताही नहीं की थी। आक्रमण, आक्रमण है। फिर वह कम्पूचिया पर हो या वियतनाम पर। भारत आक्रमण को नापने के दो गज नहीं अपना सकता।

भारत सोवियत संघ संबंध में असामंजस्यता

स्वतंत्र पर्यवेक्षक यदि यह निष्कर्ष निकालते हैं कि भारत सोवियत मैत्री एक गठबंधन का रूप ले रही है तो उन्हें दोष नहीं किया जा सकता। भारत की समूची जनता, यहां के सभी राजनीतिक दल सोवियत संघ के साथ भारत के मैत्री संबंधों को और अधिक मजबूत देखना चाहते हैं। जनता शासन में, कुछ क्षेत्रों में

तेजी से बिगड़ती हुई अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में भारत किसी सार्थक भूमिका का निर्वाह तभी कर सकता है जब वह दृढ़ता और निर्भीकता के साथ राष्ट्रों की स्वतंत्रता के अपहरण, सीमाओं के उल्लंघन और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के विरुद्ध असंदिग्ध शब्दों में अपनी आवाज बुलंद करे। भारत को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी नैतिक बल से काम लेना चाहिए।

व्यक्त आशंकाओं को झुठलाते हुए, इन संबंधों में अधिक गहराई तथा अधिक व्यापकता लाई गई थी। किंतु सोवियत संघ के साथ द्विपक्षी संबंधों को अधिक अर्थपूर्ण तथा लाभदायक बनाना एक बात है और यह भाव पैदा होने देना कि विश्व की घटनाओं के बारे में, सोवियत संघ से पृथक, भारत का अपना कोई युद्ध-नीतिक बोध नहीं है, बिलकुल दूसरी बात है।

अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक हस्तक्षेप और उसके विरुद्ध अमरीका तथा उससे जुड़े अन्य देशों की प्रक्रिया से इस भूखण्ड में जो नई परिस्थिति पैदा हुई थी उसके प्रकाश में भारत और पाकिस्तान दोनों को भूतकाल को भूलकर अपने संबंधों में एक नए अध्याय का आरंभ करना चाहिए था। खेद है कि दोनों देशों के नेतृत्व ने उस ऐतिहासिक अवसर को हाथ से जाने दिया।

पाकिस्तान को यह समझ लेना चाहिए कि खैबर के दर्रे पर सोवियत सेना की उपस्थिति से उसकी सुरक्षा के लिए उत्पन्न संकट का निराकरण विश्व में जहां से भी मिले, वहां से हथियार एकत्र करने से नहीं होगा।

मजबूत पाकिस्तान भारत के हित में

भारत को यह समझ लेना है कि उसके और सोवियत संघ के बीच में बफर के रूप में विद्यमान पाकिस्तान की स्थिरता तथा सुदृढ़ता उसके हित में है। पाकिस्तान की वर्तमान कठिनाई से लाभ उठाने की लालसा आखिर में भारत के ही लिए बहुत महंगी पड़ सकती है।

भारत सरकार को पाकिस्तान के साथ संबंधों से उत्पन्न गतिरोध को दूर करने के लिए पहल करनी चाहिए। भाजपा के उपाध्यक्ष श्री जेठमलानी जब कुछ मास पूर्व अफगान शरणार्थियों की समस्याओं के संबंध में पाकिस्तान गए थे तब पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया ने पाकिस्तान में भारत के राजदूत की उपस्थिति में, उनसे कहा था कि पाकिस्तान युद्ध नहीं समझौता करने के लिए तैयार है। हमें इस मामले को आगे बढ़ाना चाहिए था। हमें पीकिंग के साथ भी उच्चस्तर पर फिर से वार्तालाप प्रारंभ करने के लिए कदम उठाना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में दृढ़ता और निर्भीकता

तेजी से बिगड़ती हुई अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में भारत किसी सार्थक भूमिका का निर्वाह तभी कर सकता है जब वह दृढ़ता और निर्भीकता के साथ राष्ट्रों की स्वतंत्रता के अपहरण, सीमाओं के उल्लंघन और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के विरुद्ध असंदिग्ध शब्दों में अपनी आवाज बुलंद करे। भारत को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी नैतिक बल से काम लेना चाहिए।

बहानों की तलाश

सभी मोर्चों पर अपनी भारी विफलता पर पर्दा डालने के लिए शासन नित्य नए बहाने गढ़ता है। पहले 6 महीने यह कह कर गुजार दिए गए कि जनता सरकार

के 28 महीनों में गाड़ी पटरी से उतर गई थी, धरती में धंस गई थी, उसे पुन: पटरी पर लाने में वक्त लगेगा। अगले 6 महीने यह कह कर काटे जा रहे हैं कि क्या करें, विरोधी दल कुछ करने ही नहीं देता!

जनता शासन में दिल्ली में महिलाओं के गले से सोने की जंजीरें छीन लिए जाने की इक्का-दुक्का घटनाओं पर आसमान सर पर उठाने वाले आज दिन-दहाड़े होने वाली डकैतियों को लूटमार बताने के लिए कानूनी बाल की खाल खींचने से नहीं झिझकते। रंगा और बिल्ला की गिरफ्तार में हुई देर के विरोध में मेरे माथे को पत्थर से लहुलुहान करने वाले जयसिंघानी के हत्यारों का पता लगाने, श्रीमती पूर्णिमा सिंह की मृत्यु पर पड़े रहस्य के पर्दे को उठाने तथा निरंकारी बाबा की हत्या के लिए उत्तरदायी सभी अपराधियों को गिरफ्तार करने में पुलिस प्रशासन की विफलता के खिलाफ मुंह तक नहीं खोलते।

बिहार में पिपरा और पारसबीघा की पीड़ा बेलछी से किसी मात्रा में कम नहीं थी। किंतु वहां जाने के लिए प्रधानमंत्री को सरकारी हेलीकोप्टर का उपयोग करने का भी ध्यान नहीं आया, जब बेलछी जाने के लिए हाथी की सवारी में उन्हें संकोच नहीं हुआ। नारायणपुर के काण्ड के लिए विरोधी दल की सरकार को बर्खास्त करने वाली प्रधानमंत्री मुरादाबाद में सैंकड़ों लोगों की हत्या को रोकने में विफल प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री का त्यागपत्र मंजूर करने के लिए भी तैयार नहीं हुई। आज वे विरोधी दलों पर हर घटना का राजनीतिक लाभ उठाने का आरोप करते हुए नहीं थकती। किंतु उन्होंने स्वयं नारायणपुर में क्या कहा था इसे वे सरलता से भूल गई जान पड़ती है। उन्होंने कहा था कि यदि सरकार गलती करती है तो विरोधी दल उसका फायदा क्यों न उठाएं !

किसान संघर्ष

वस्तुस्थिति यह है कि देश के विभिन्न भागों में जन-आंदोलनों की जो लहर आई है, वह स्वयंस्फूर्त है। असम में विदेशियों की घुसपैठ के विरुद्ध पिछले एक वर्ष से चल रहा आंदोलन, जिसने जन-समर्थन तथा जन-सहयोग की व्यापकता की दृष्टि से स्वतंत्रता आंदोलन को बनाए रखने के लिए कटिबद्ध युवाशक्ति का एक राष्ट्रीय अनुष्ठान है। दलगत राजनीति अथवा राजनीतिक दलों से उसका कोई संबंध नहीं।

कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि में किसान अपनी मांगों को मनवाने के लिए जो संघर्ष कर रहे हैं, वह राजनीतिक दलों द्वारा प्रेरित नहीं है। सभी किसान, फिर वे किसी भी राजनीतिक दल से संबद्ध हों और इनमें सत्तारूढ़ दल से जुड़े हुए किसान शामिल हैं, इस लड़ाई में भाग ले रहे हैं।

आसमान छूती महंगाई

पिछले कुछ वर्षों में किसानों की आर्थिक स्थिति बिगड़ी है। रासायनिक खाद, पानी, बिजली, डीजल, बीज आदि के दाम बढ़े हैं। किंतु उस अनुपात में उपज के मूल्य नहीं बढ़े। कृषि वस्तुओं की भारी महंगाई ने भी किसान को बुरी तरह प्रभावित किया है। वह उत्पादक के साथ उपभोक्ता भी है।

ग्रामीण ऋणग्रस्तता

ग्रामीण ऋणग्रस्तता के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। कुछ वर्ष पहले ग्रामीण क्षेत्र में जो ऋण बकाया थे उनकी राशि 750 करोड़ रुपये थी। अब यह बढ़कर 6000 करोड़ रुपये हो गई है। 85 फीसदी किसान कर्ज में डूबे हैं।

भारतीय जनता पार्टी किसानों की लाभप्रद मूल्यों की मांग को सर्वथा उचित समझती है और उसका पूरी तरह समर्थन करती है।

जब तक गन्ना और चीनी, कपास और कपड़ा, मूंगफली और वनस्पति तेल, जूट और जूट से बने सामान की कीमतों में कोई अनुपात कायम नहीं किया जाता, तब तक कच्चे माल के उत्पादकों का शोषण होता रहेगा और औद्योगिक माल के निर्माता अंधाधुंध मुनाफा कमाते रहेंगे।

कपास की गिरती कीमतें

पिछले कुछ वर्षों में कपड़े के दामों में तीन गुना वृद्धि हुई है, किंतु कपास के दाम गिरे हैं। आंध्र का सुप्रसिद्ध कपास वरलक्ष्मी, जिसकी कीमत पहले 1200-1500 रुपया प्रति क्विंटल थी, अब 500 रुपये तक नीचे आ गई है। जूट उत्पादन का लागत मूल्य 192 रुपए प्रति टन है, जबकि सरकार द्वारा निश्चित कीमत 150 रुपए प्रति टन मात्र है।

आंध्र में सरकार ने धान का समर्थन मूल्य 105 रुपये प्रति क्विंटल तय किया था, किंतु खरीद का समुचित प्रबंध न होने के कारण किसानों को अपना धान 75 रुपये प्रति क्विंटल के भाव से बेचने पर विवश होना पड़ा। यह स्थिति अन्यत्र तथा अन्य फसलों के सिलसिले में भी हुई है।

कृषि उत्पाद मूल्य

कृषि मूल्य आयोग अपने कर्त्तव्य का पालन करने में विफल रहा है। उसे भंग कर दिया जाए और एक नई संस्था का गठन किया जाए जो कृषि उपज के मूल्य का निर्धारण करते समय लागत के साथ-साथ औद्योगिक माल की कीमतों तथा किसान के बढ़ते हुए खर्चों तथा उसकी आवश्यकताओं को भी ध्यान रखे।

क्रमश:

पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर विशेष

विचारक दीनदयालजी

✍ संजीव कुमार सिन्हा

आजादी के बाद भारतीय राजनीति को जिन राजनेताओं ने बौद्धिकता से ओत-प्रोत किया, उनमें पं. दीनदयाल उपाध्याय का नाम उल्लेखनीय है। दीनदयालजी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनकी सादगी के लोग कायल थे। वे विनम्रता के प्रतीक थे। सचाई की प्रतिमूर्ति थे। वे कुशल संगठक थे। लेकिन इन सबसे बढ़कर वे प्रखर विचारक थे।

आजादी के तत्काल बाद प्रमुख तौर पर तीन विचारधाराओं का वर्चस्व रहा। कांग्रेस, कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट पार्टी सेकुलरिज्म, साम्यवाद और समाजवाद की विचारधारा का। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि स्वतंत्र भारत में जहां हमें भारतीयता की विचारधारा को अंगीकार कर आगे बढ़ना था वहीं उपरोक्त तीनों ही पार्टियां पाश्चात्य विधारधारा से अनुप्राणित थीं। वे भारतीय विचार से कोसों दूर थे। राजनीतिक रूप से हम भले ही स्वाधीन हो गए थे लेकिन बौद्धिक रूप से हम पाश्चात्य विचारधारा की जकड़न में थे।

इसी वैचारिक परिवेश को देखते हुए भारतीय विचार से अनुप्राणित एक राजनीतिक दल की आवश्यकता महसूस की गई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूज्य श्रीगुरूजी से परामर्श कर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना की। भारतीय जनसंघ की विचारधारा सुनिश्चित करने और उसे प्रभावी संगठन बनाने में पं. दीनदयाल उपाध्याय ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उन्होंने अपने जीवन का क्षण-क्षण लगा दिया। 1952 में कानपुर में जनसंघ का अधिवेशन हुआ। दीनदयालजी के विचारों से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अत्यंत प्रभावित हुए।

दीनदयालजी के विचारों से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि यदि मुझे दीनदयालजी जैसे चार-पांच लोग मिल जाएं तो मैं पूरे देश में जनसंघ को खड़ा कर लूंगा। उन्होंने दीनदयालजी को राष्ट्रीय महामंत्री का दायित्व सौंपा। 15 वर्षों तक भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री के नाते उन्होंने देश भर में प्रवास कर संगठन को सशक्त किया और पार्टी की नीति-रीति तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1967 में वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि यदि मुझे दीनदयालजी जैसे चार-पांच लोग मिल जाएं तो मैं पूरे देश में जनसंघ को खड़ा कर लूंगा। उन्होंने दीनदयालजी को राष्ट्रीय महामंत्री का दायित्व सौंपा। 15 वर्षों तक भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री के नाते उन्होंने देश भर में प्रवास कर संगठन को सशक्त किया और पार्टी की नीति-रीति तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1967 में वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

25 सितम्बर 1916 को जन्मे दीनदयालजी मेधावी छात्र थे और सदैव प्रथम श्रेणी में परीक्षाएं उत्तीर्ण होते रहे। उन्होंने सीकर (राजस्थान) से दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। 1937 में इंटरमीडिएट में प्रथम श्रेणी प्राप्त किया और बोर्ड में सर्वप्रथम रहे। 1939 में सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर से प्रथम श्रेणी से बीए किया।

दीनदयालजी को पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। वे हर वक्त कुछ न कुछ पढ़ते अथवा लिखते दिखाई देते थे। वे खूब प्रवास करते थे, इसलिए रेलगाड़ी में पुस्तकें पढ़ना उनकी आदत थी।

दीनदयालजी ने पत्रकार की भूमिका का निर्वाह करते हुए भी राष्ट्रवादी आंदोलन को बौद्धिक रूप से प्रखर बनाया। उन्होंने स्वदेश (दैनिक), पांचजन्य (साप्ताहिक) एवं राष्ट्रधर्म (मासिक) पत्रिका के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे 'ऑर्गेनाइजर' में लगातार एक साप्ताहिक

स्तंभ 'पॉलिटिकल डायरी' लिखते थे, जिससे देशभर में कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन मिलता था।

दीनदयालजी ने साहित्य सृजन भी किया। हिंदी में एक उपन्यास 'सम्राट चंद्रगुप्त' लिखा। बाद में जगद्गुरु शंकराचार्य की जीवनी लिखी। उन्होंने रा. स्व. संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार की जीवनी का अनुवाद किया। 'द टू प्लान्स', 'भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा', 'राष्ट्रजीवन की दिशा' उनकी चर्चित कृति है।

दीनदयालजी अन्य राजनीतिक दलों के प्रमुख नेताओं से भी संपर्क-संवाद करते थे। उन्होंने समाजवादी विचारक डॉ. राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर भारत-पाक महासंघ पर संयुक्त वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए दोनों देशों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की बात को आगे बढ़ाया, जो आज एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में जाना जाता है।

उन दिनों पूंजीवाद, साम्यवाद और समाजवाद की विचारधारा का बोलबाला था। ऐसे में दीनदयालजी ने भारतीय विचार पर आधारित एकात्ममानववाद का प्रतिपादन किया। खूब विचार-विमर्श के पश्चात् इसका परिष्कार किया। इस पर चर्चा सर्वप्रथम विजयवाड़ा के सम्मेलन में हुई। बाद में ग्वालियर में उन्होंने विचार-विमर्श के लिए सैकड़ों बुद्धिजीवियों को आमंत्रित किया, जिस पर विस्तृत चर्चा हुई। फिर विशाखापत्तनम में एकात्ममानववाद पर प्रस्ताव पारित हुआ। प्रत्येक प्रतिनिधि के एक-एक प्रश्न का समाधान उन्होंने दिया। बौद्धिक जगत में एकात्ममानववाद को बड़ी प्रतिष्ठा मिली। समाजवादी नेता श्री राममनोहर लोहिया ने भी इसकी प्रशंसा की।

एकात्ममानव दर्शन के अनुसार, भारतीय संस्कृति व्यक्ति को एक ऐसे संपूर्ण मानव के रूप में स्वीकार करती है जिसकी भौतिक आवश्यकताएं तो हैं परंतु साथ ही उनमें मन, बुद्धि, आत्मा का भी निवास है। जब तक व्यक्ति के इन सब गुणों का समन्वित विकास नहीं होता, तब तक भारतीय संस्कृति के अनुसार व्यक्ति का विकास अपूर्ण है।

व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भूख मिटाए बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति आवश्यक है। उपजीविका के साधन शांति, ज्ञान एवं तादात्म्य भाव से ही ये भूखें मिटती हैं। व्यष्टि और समष्टि के बीच का समन्वय भी इस संपूर्णता के विचार से ही संभव है।

एकात्ममानववाद दर्शन की व्याख्या करते हुए दीनदयालजी कहते हैं कि व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भूख मिटाए बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति आवश्यक है। उपजीविका के साधन शांति, ज्ञान एवं तादात्म्य भाव से ही ये भूखें मिटती हैं। व्यष्टि और समष्टि के बीच का समन्वय भी इस संपूर्णता के विचार से ही संभव है।

संपूर्ण मानव का विचार न कर केवल एक अर्थपरायण मानव को सभी कृतियों का केंद्र बनाकर विकसित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अधूरी है। अधिकतम लाभ की स्वार्थी आकांक्षा इस व्यवस्था की प्रेरक तथा प्रतिस्पर्धा नियामक शक्ति है। ये भाव भारतीय जीवन दर्शन से बेमेल है।

भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। सृष्टि की विभिन्न सत्ताओं तथा जीवन के विभिन्न अंगों के दृश्यभेद स्वीकार करते हुए वह उनके अंतर में एकता की खोजकर उनमें समन्वय की स्थापना करती है। परस्पर विरोध और संघर्ष के स्थान पर वह परस्परावलंबन, पूरकता, अनुकूलता और सहयोग के आधार पर सृष्टि की क्रियाओं का विचार करती है। वह एकांगी न होकर सर्वांगीण है। उसका दृष्टिकोण सांप्रदायिक अथवा वर्गवादी न होकर सर्वात्मवादी एवं सर्वोत्कर्षवादी है। एकात्मकता उसकी धुरी है।

26 से 30 दिसंबर 1967 में कालीकट में भारतीय जनसंघ का अधिवेशन हुआ। जनसंघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में उन्होंने बहुत ही विचारशील अध्यक्षीय उद्बोधन दिया था, जिसकी बड़ी चर्चा हुई थी। आज भी वह भाषण प्रासंगिक है और हर राजनीतिक कार्यकर्ता को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। लेकिन नियति की विडंबना देखिए कि 40 दिन के भीतर 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे यार्ड में उनकी रहस्यमय परिस्थिति में मृत्यु हो गई। उनके द्वारा प्रणीत एकात्ममानववाद हम सबके लिए मार्गदर्शन है। हम सभी को उनके विचारों को साकार करने के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहना चाहिए। ■

भाजपा राष्ट्रीय प्रकाशन के संपादकों की बैठक

भाजपा की पत्रिकाएं भाजपा के कार्यक्रमों एवं वैचारिकी पर जोर दें : अमित शाह

भाजपा के केन्द्रीय एवं प्रादेशिक पत्रिकाओं के संपादकों की बैठक 13 जनवरी को भाजपा केन्द्रीय कार्यालय 11, अशोक रोड, नई दिल्ली में संपन्न हुई। इस बैठक में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रभात झा एवं डॉ. विनय सहस्रबुद्धे, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल एवं राष्ट्रीय मंत्री श्रीकांत शर्मा उपस्थित थे। बैठक में कुल 21 प्रदेशों से 30 प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि भाजपा की केंद्रीय व सभी प्रादेशिक पत्रिकाएं भाजपा के कार्यक्रमों एवं वैचारिकी के प्रकाशन को प्रमुखता देंगी। उन्होंने कहा कि भाजपा के मुखपत्र के रूप में इन पत्रिकाओं का मुख्य कार्य भाजपा के एजेंडे को प्रचारित-प्रसारित करना है। साथ ही पत्रिकाओं के विषय में स्पष्टता भी हो। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने संपादकों से पत्रिकाओं के प्रकाशन में आने वाली कठिनाइयों के बारे में भी चर्चा की।

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रभात झा ने कहा कि पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यकर्ताओं को न सिर्फ भाजपा कार्यक्रमों एवं वैचारिकी की उचित जानकारी प्राप्त होती है, बल्कि उनका मनोबल भी मजबूत होता है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात समेत कई राज्यों में भाजपा की पत्रिकाएं नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं और उनकी गुणवत्ता भी काफी बेहतर है। उन्होंने कहा कि दीनदयालजी, अटलजी, आडवाणीजी भी प्रारम्भिक जीवन में पत्रकार रहे। श्री प्रभात झा ने कहा कि संस्मरणों का बड़ा महत्त्व होता है और इन संस्मरणों के प्रकाशन से कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलती है। बैठक के संबंध में उन्होंने कहा कि इस तरह की बैठकें एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म हैं, जहां आपसी संवाद के अलावा सीखने-सिखाने का अवसर प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के प्रवास के दौरान इस तरह के संवाद में और तीव्रता आएगी।

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सहस्रबुद्धे ने कहा कि पत्रिकाओं का उपयोग संवाद व बौद्धिक गतिविधियों के रूप में होना चाहिए। इनका उपयोग संवाद फोरम के रूप में भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पत्रिकाओं में कार्टून, प्रचलित नारों आदि का भी इस्तेमाल होना चाहिए। इनके जरिए सहभागिता बढ़ाने का कार्य होना चाहिए। श्री सहस्रबुद्धे ने कहा कि प्रकाशन फोरम का इस्तेमाल व्यक्ति विकास के लिए भी होना चाहिए। साथ ही इन पत्रिकाओं से जुड़े पत्रकारों को पार्टी पत्रिकाओं से बाहर जाकर भी लेख लिखना चाहिए और अपना स्थान बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस तरह का

फोरम मिलने-जुलने के अलावा संपर्क बनाने का नेटवर्क बनना चाहिए।

समापन-सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल ने कहा कि पत्रिकाओं की भूमिका भाजपा कार्यक्रमों एवं वैचारिकी प्रकाशन के अलावा सदस्यता अभियान में के विस्तार में भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता अभियान के अनुभव-कथन भी पत्रिकाओं में छपने चाहिए। सदस्यता गतिविधियों की फोटो आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होनी चाहिए। उन्होंने प्रादेशिक पत्रिकाओं के संपादकों से कहा कि वे जिला स्तर के समाचारों को भी छापें। इसके लिए जिले की टीम से एक व्यक्ति तय होना चाहिए। उन्होंने कहा कि संपादकों का कार्य केवल सर्कुलेशन बढ़ाना ही नहीं बल्कि हर कार्यकर्ता को भावनात्मक-वैचारिक रूप से तैयार करना भी है।

बैठक में जम्मू-कश्मीर से श्री रजनीश जैन, पंजाब से डा. भाई परमजीत सिंह, चण्डीगढ़ से श्री ब्रह्मजीत कालिया, हरियाणा से श्री जवाहर यादव, हिमाचल प्रदेश से श्री प्रवीश के. शर्मा, राजस्थान से श्री उज्ज्वल कुमार धूप्या, गुजरात से श्री निमेष जोशी, महाराष्ट्र से श्री गणेश हाके, मध्य प्रदेश से श्री जयकृष्ण गौड़, छत्तीसगढ़ से श्री सुभाष राव, उत्तराखंड से श्रीमती विनोदिनी उन्नियाल, बिहार से श्री आशुतोष झा, झारखण्ड से श्री रविनाथ किशोर, केरल से श्री एम. राजशेखर, प. बंगाल से श्री प्रदीप चक्रबर्ती, तमिलनाडु से श्री ला. गणेशन, उड़ीसा से श्री पूर्णचन्द्र मलिक, असम से श्री जीतेन शर्मा, दादर एवं नगर हवेली से श्री अनिल भाई पटेल शामिल थे। इनके अलावा भाजपा मुखपत्र कमल संदेश के संपादकीय विभाग के सदस्यगण भी उपस्थित थे। ■

प्रधानमंत्री बनने के लिए नीतीश कुमार ने भाजपा से नाता तोड़ा : अमित शाह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 23 जनवरी को पटना के वेटनरी कॉलेज मैदान में भाजपा द्वारा आयोजित कर्पूरी जयंती समारोह को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद और नीतीश कुमार पर कांग्रेस के साथ हाथ मिला कर समाजवादी नेता कर्पूरी ठाकुर के उपदेशों के खिलाफ जाने के लिए प्रहार किया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने आरोप लगाया कि नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री बनने के लिए भाजपा से नाता तोड़ा।

भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद श्री अमित शाह पहली बार पटना आए थे। उनके साथ केंद्रीय संचार व आइटी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद, कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह, पेट्रोलियम राज्यमंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान व कौशल विकास राज्यमंत्री श्री राजीव प्रताप रूडी भी थे।

यहां वेटनरी कॉलेज मैदान में भाजपा की ओर से जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री शाह ने लालू प्रसाद और नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा, ''समाजवादी मूल के बिहार के नेताओं से वह कहना चाहते हैं कि कर्पूरी ठाकुर तो अंतिम दम तक कांग्रेस के खिलाफ संघर्ष करते रहे पर आपने उनसे सीख लेने के बजाय सत्ता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस के साथ समझौता करने का काम किया। आपको कर्पूरी जी को याद करके उनके सिद्धांतों की बात करने का कोई हक नहीं है।'' श्री शाह ने कहा कि कहा कि समाज के पिछड़े वर्ग को न्याय दिलाने और उनके उत्थान के लिए समर्पित रहे जननायक कर्पूरी ठाकुर को उस समय भी उन्हें मुख्यमंत्री बनाने में जनसंघ और भाजपा की अहम भूमिका थी।

उन्होंने कहा कि कर्पूरी जी के सपनों को साकार करने का काम भाजपा ने किया है और आज पिछड़े समाज से आने वाले नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री पद पर आसीन होकर भारत का नेतृत्व कर रहे हैं। श्री शाह ने कहा कि बिहार में जदयू और भाजपा का 17 सालों से गठबंधन चल रहा था जिसे नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री बनने के अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के कारण तोड दिया।

श्री शाह ने कहा कि बिहार में गठबंधन टूटने के बाद कई तरह की अटकलों के बावजूद प्रदेश की जनता ने पिछले वर्ष लोकसभा चुनाव में मोदी के नेतृत्व में विश्वास करके राज्य की कुल 40 लोकसभा सीटों में से 31 सीटें देकर पूर्ण बहुमत की भाजपा की सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और वह इसके लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

श्री शाह ने कहा कि जिस प्रकार मोदी ने पिछले आठ महीनों में केंद्र में सरकार चलायी है उससे भाजपा की लोकप्रियता और बढ़ी है तथा देश के चार राज्यों महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और जम्मू कश्मीर में हुए विधानसभा चुनाव में से तीन में भाजपा सरकार बनाने में सफल रही तथा अब दिल्ली विधानसभा का चुनाव है जिसके बाद भाजपा का विजय रथ बिहार आएगा और यहां की जनता भाजपा को 185 सीटें दिला कर उसकी सरकार बनावायेगी। ■

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय ने 'मेक इन–नार्थ ईस्ट' का शुभारम्भ किया

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय के केन्द्रीय राज्य मंत्री डा. जितेन्द्र सिंह ने 20 जनवरी को दिल्ली में व्यापक पर्यटन योजना की शुरुआत ''मेक इन नार्थ ईस्टर'' (पूर्वोत्तर में निर्मित) की घोषणा से की है। उन्होंने अपनी घोषणा में यह 'ब्रांड एम्बेस्डर' की नियुक्ति की भी घोषणा की, जो पूर्वोतर की विरासत और पहचान का आदर्श प्रस्तुत करे और साथ ही सभी देशवासियों को 'लुक ईस्ट' और 'एक्ट ईस्ट' की तरफ देखने की प्रेरणा दे सके।

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास तथा पर्यटन मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारियों की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की ''मेक इन नार्थ ईस्ट'' पहल की अवधारणा से प्रेरित होकर चाय प्रसंस्करण, आर्गेनिक फार्मिंग, खाद्य प्रसंस्करण आदि अनेक क्षेत्रों में पूरी तरह से पूर्वोत्तर विशेषज्ञ तैयार करने होंगे। निवेशकों के लिए एक विस्तृत ब्रोशर भी तैयार करना होगा और पूरे देश में इसे जारी कर पूर्वोत्तर में निवेश को प्रोत्साहित करना होगा।

डा. जितेन्द्र ने आगे कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र को निवेशकों के लिए लक्ष्य बनाकर छुट्टी मनाने वालों और पर्यटकों को इस दिशा में प्रोत्साहित किया जाएगा।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में निर्माण मंत्रालय का कार्यभार संभालने के दो महीने के बाद डा. जितेन्द्र सिंह ने स्मरण कराया कि उनका प्रथम निर्णय अपने मंत्रालय के लिए वर्ष 2015 का कैलेण्डर तैयार करना था जो पूर्वोत्तर के समारोहों की कथा पर आधारित हो तथा प्रत्येक माह में उस विशेष प्रांत के प्रत्येक क्षेत्र के पारम्परिक स्थानीय समारोह को प्रदर्शित किया जाए। जब देशभर में परिचालित किए जाने पर यह वार्षिक कैलेण्डर एक ऐसे दस्तावेज का करेगा जिससे इस एक दस्तावेज से क्षेत्र की परम्परा, संस्कृति और पर्यटन का पता चल सके।

'मेक इन नार्थ ईस्ट' पहल का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य पूर्वोत्तर के लिए राजस्व इकट्ठा करना मात्र नहीं है, बल्कि यहां के नवयुवकों को रोजगार के अवसर पैदा कर अन्य स्थानों पर जाने से रोकना भी है, जो इस समय इस क्षेत्र में चल रहा है।

डा. जितेन्द्र सिंह ने भावी योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका मंत्रालय जल्द ही मुम्बई में फिल्म उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के लिए सम्मेलन का आयोजन करेगा ताकि पूर्वोत्तर में स्थानीय शूटिंग की विराट संभावनाओं के प्रति जागरूक किया जा सके, जिसे बहुत आसानी से किया जा सकता है और विदेशों में खाक छानने की बजाए यहां शूटिंग करने से लागत में बहुत बड़ी कटौती की जा सकती है। उन्होंने कहा यह विचित्र बात है कि मुम्बई एक फिल्म निर्माता था, जिसने पूर्वोत्तर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता रखी और वह थे स्वर्गीय देव आनन्द अत: फिर से पूर्वोत्तर लोकेशनों की चित्रमयता की महिमा को उजागर करने के लिए वर्तमान पीढ़ी के फिल्म निर्माताओं को फिर से जागरूक करना आश्यक है।

डा. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि 'मेक इन नार्थ ईस्ट' पहल का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य पूर्वोत्तर के लिए राजस्व इकट्ठा करना मात्र नहीं है, बल्कि यहां के नवयुवकों को रोजगार के अवसर पैदा कर अन्य स्थानों पर जाने से रोकना भी है, जो इस समय इस क्षेत्र में चल रहा है। ■